Key to
Navjeevan Practice Book

Standard
7

Teacher's Copy

हिंदी सुलभभारती

NAVJEEVAN
PUBLICATIONS PVT. LTD.
MUMBAI ★ PUNE

अनुक्रमणिका

अ. क्र.	पाठ का नाम	पृष्ठ क्र.
	पहली इकाई	
1.	वाचन मेला	3
2.	फूल और काँटे	4
3.	दादी माँ का परिवार	8
4.	देहात और शहर	13
5.	बंदर का धंधा	18
6.	'पृथ्वी' से 'अग्नि' तक	19
7.	जहाँ चाह, वहाँ राह	24
8.	जीवन नहीं मरा करता है	30
◆	अभ्यास - 1	34
◆	पुनरावर्तन -1	35
	दूसरी इकाई	
1.	अस्पताल	38
2.	बेटी युग	39
3.	दो लघुकथाएँ	46
4.	शब्द संपदा	51
5.	बसंत गीत	60
6.	चंदा मामा की जय	63
7.	रहस्य	71
8.	हम चलते सीना तान के	77

अ. क्र.	पाठ का नाम	पृष्ठ क्र.
◆	अभ्यास - 2	84
◆	अभ्यास - 3	87
◆	पुनरावर्तन - 2	88

पहली इकाई

1. वाचन मेला

प्र.1. (1)

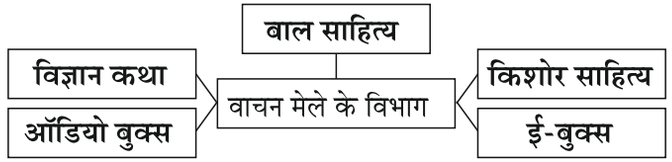

(2)

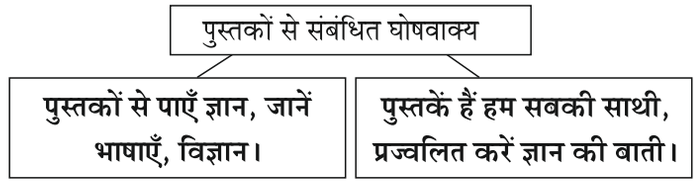

(3) (i) (1) किताब (2) पोथी

(ii) (1) परी कथा (2) रहस्य कथा

(4) पुस्तकें ज्ञान और मनोरंजन से ओत-प्रोत होती हैं । वे ज्ञान का अक्षय भंडार होती हैं जो हमारा सही मार्गदर्शन करती हैं । वे समाज में नवचेतना का संचार कराती हैं। अपने अंदर समाए विचारों के अस्त्र का अचूक निशान साधकर जनजागृति लाने का कार्य करती हैं। समाज की डगमगाती नौका की सशक्त पतवार हैं ये पुस्तकें। ये हमें साहस और धैर्य प्रदान करती हैं। अच्छी पुस्तकें हमें अमृत की तरह प्राण शक्ति अर्पित करती हैं। वे चरित्र निर्माण का सर्वोत्तम साधन है। उन्हें पढ़कर जीवन में कुछ महान कर्म करने की भावना हमारे मन में जगाती है। पुस्तकें प्रकाश-गृह हैं जो समय के विशाल समुंदर में खड़ी हैं और हमारी जीवन नौका का मार्गदर्शन कर रही हैं।

(5) जब किसी स्थान पर लोग सामाजिक, धार्मिक, व्यापारिक या अन्य कारणों से एकत्रित होते हैं तो उसे मेला कहते हैं। मेले में तरह-तरह के क्रियाकलाप देखने को मिलते हैं। वास्तव में 'वाचन मेला' पुस्तक प्रेमियों के लिए महान उत्सव का अवसर माना जाता है। चित्र में पुस्तकों के अलग-अलग विभाग दिखाई दे रहे हैं। बच्चे अपनी-अपनी रुचि के अनुसार पुस्तकों की जानकारी पाने में व्यस्त हैं। बच्चों ने ग्रंथदिंडी

निकालकर पुस्तकों का महत्त्व समझाने का प्रयास किया है । उनके हाथों में फलक पट्टियाँ हैं जो कह रही हैं कि पुस्तकें हमें ज्ञान देती हैं, भाषा और विज्ञान की जानकारी देती हैं। चित्र के घोष वाक्य पुस्तकों का महत्त्व समझाते हैं।

उपक्रम (Activity)

(1) पुस्तक में होती नई खोज, पुस्तक से मिलती नई सोच।
जब ना हो कोई संगी-साथी, पुस्तक हीं तब मन बहलाती।
पुस्तक देती हमको ज्ञान जब होता मन परेशान
सोने चाँदी या रत्न से पुस्तक की कीमत अधिक होती हैं।

(2) विद्यार्थी स्वयं करें।

2. फूल और काँटे

प्र.1. (1)

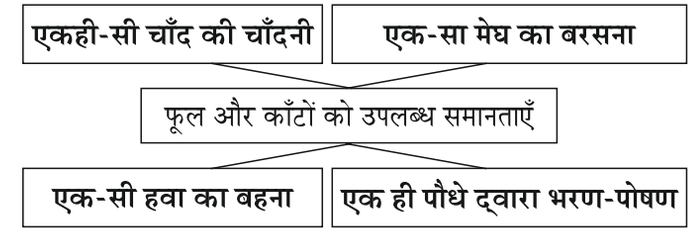

(2) (i) (1) मेह (2) रात

(ii) रात में उनपर **चमकता** चाँद भी,
एक ही-सी **चाँदनी** है डालता।

(3) फूल और काँटों का जन्म एक ही जगह पर होता है। एक ही पौधा दोनों का भरण-पोषण करता है। रात में उनपर चाँद चमकता है और अपनी चाँदनी समान रूप से उनपर बिखेरता है।

बादल उनपर समान रूप से अपना जल बरसाता है। हवाएँ उन दोनों पर एक जैसी ही बहती हैं। इस तरह एक ही परिवेश में बढ़ने वाले ये दोनों फिर भी एक जैसे नहीं होते। दोनों का व्यवहार बिलकुल अलग होता है।

प्र.2. (1)

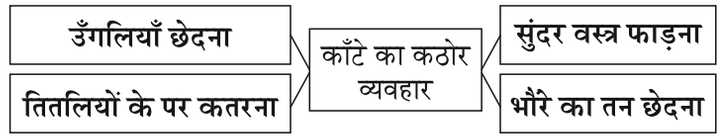

(2) (I)

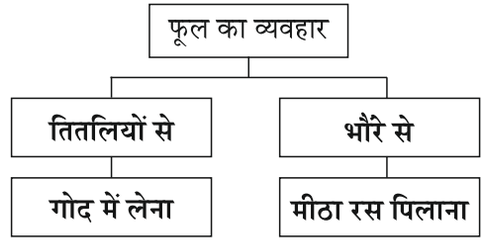

(ii) मनुष्य को खुश करने के फूल के साधन

(3) काँटा किसी की उँगलियाँ छेदकर लहूलुहान कर देता है तो किसी के सुंदर वस्त्र फाड़ देता है। प्यारी-प्यारी तितलियों के पंख कतर देता है तो भौंरे के श्यामल शरीर को भी छेदकर घायल कर देता है।

काँटे के बिलकुल विपरीत होता है फूल। वह तितलियों को अपनी गोद में लेता है और भौंरे को अपना मधुर रस (शहद) पिलाता है। अपनी सुगंध और सुंदर आकर्षक रंग से सभी को खुशी देता है।

प्र.3. (1) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

(2) है खटकता एक सबकी आँख में, दूसरा है सोहता सुर सीस पर, किस तरह कुल की बड़ाई काम दे, जो किसी में हो बड़प्पन की कसर।

(3) कवि ने इन पंक्तियों द्वारा मनुष्य महान कुल में जन्म लेने से बड़ा नहीं बनता बल्कि अपने महान, श्रेष्ठ कर्मों से बड़ा बनता हैं। कर्मों को महत्त्व दिया है। इसिलिए यह पंक्तियाँ मुझे पसंद हैं।

(4) फूल और काँटे को प्रकृति की कृपा और पौधे द्वारा भरण-पोषण एक-सा मिलता है फिर भी दोनों के व्यवहार में जमीन-आसमान का अंतर है। काँटे का दुष्ट व्यवहार उसे हम सब की आँखों में खटकाता है और फूल के कोमल व्यवहार के कारण वह देवताओं के शीश पर चढ़ाया जाता है। अर्थात बड़प्पन भी हमें हमारे कर्मों के कारण ही मिलता है। जन्म किस कुल में हुआ इससे भी महत्त्वपूर्ण है हम किस तरह औरों के साथ बर्ताव करते हैं। कुल की बड़ाई से भी हमारे कर्म श्रेष्ठ होते हैं जो हमें संसार में बड़प्पन दिलाते हैं। इसलिए अच्छे कर्म करने का संदेश कविता द्वारा कवि दे रहे हैं।

स्वाध्याय

प्र.1 (अ) (1) फूल भौंरे को अपना मीठा रस पिलाता है।

(2) बड़प्पन की कसर रह जाने पर कुल की बड़ाई काम नहीं देती।

(3) काँटा तितलियों के पर कतरता है।

(4) फूल तितलियों को गोद में लेता है।

(5) मेह (मेघ) एक-सा बरसता है।

(आ) (1) फूल और काँटों का ढंग अलग-अलग है। ✓

(2) काँटा सबकी आँखों में खटकता है। ✓

(3) फूल को उसके कुल के कारण बड़प्पन मिलता है। ✗

(4) फूलों की सुगंध हमें खुश नहीं कर पाती। ✗

(इ) (1) देवताओं के शीश पर (2) अपनी चाँदनी (3) काँटा

(ई) (1) पौधा (2) श्याम

व्याकरण

★ **समानार्थी शब्दों की जोड़ियाँ** **विरुद्धार्थी शब्दों की जोड़ियाँ**

पुष्प - फूल	रात × दिन
जल - पानी	छोटा × बड़ा
मेह - बादल	उदय × अस्त
पवन - हवा	सम्मान × अपमान

वाक्य : पुष्प = फूल - पुष्प बनकर जीवन को महकाना चाहिए ।
बालक फूल-सा कोमल था।

जल = पानी - जल ही जीवन है, उसे व्यर्थ न बहाएँ।
पानी पीते ही प्यास काफूर हो गई ।

मेह = बादल - मेह की कृपा से कृषि फूली-फली ।
आकाश में बादल छाए थे ।

पवन = हवा - मलय पर्वत से शीतल पवन बह रही है।
हवा में प्रदूषण बढ़ गया है।

रात × दिन - रमेश रात-दिन मेहनत कर अपने बच्चों को पढ़ा रहा है।

छोटा × बड़ा - कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं होता।

उदय × अस्त - ध्रुवीय प्रदेशों में सूर्य के उदय और अस्त का अंतर 20 से 22 घंटे तक बड़ा होता है।

सम्मान × अपमान - आज तक जो लोग रमेश को सम्मान देते थे, दिन पलटते ही गरीबी आने पर उसका बात-बात पर अपमान करने लगे।

वाचन जगत से

★ खादी ग्रामोद्योग का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को अधिक से अधिक रोजगार के अवसर प्रदान करना है। खादी हाथ से काते हुए सूत का उपयोग करके हाथ से बुना हुआ कपड़ा होता है। सूत कताई की यह प्रक्रिया चरखे द्वारा की जाती है। इस प्रक्रिया के लिए न तो फैक्ट्री बनाने की जरूरत होती है ना ही इंधन की जरूरत होती है जिससे पर्यावरण को नुकसान हो। सरकार जानती है कि खादी ग्रामोद्योग को प्रोत्साहन देकर जहाँ लोगों को रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे वहीं देश और विश्व के पर्यावरण को अच्छा बनाने में भी योगदान होगा। खबर है कि खादी ग्रामोद्योग आयोग ने एअर इंडिया कंपनी के साथ करार किया है। अब उसके क्रू मेंबर खादी की वर्दी पहनेंगे। इससे देश विदेश में खादी का नाम होगा। खादी का विक्रय बढ़ाने में यह करार मददगार सिद्ध होगा और रोजगार के अवसर बढ़ेंगे।

बताओ तो सही

★ मुझे गुलाब का फूल पसंद है। इसलिए नहीं कि वह फूलों का राजा है बल्कि इसलिए कि अनगिनत काँटों के ऊपर खिला है और उफ तक नहीं करता बल्कि अपनी मुस्कराहट, अपनी सुगंध बिखेरकर दूसरों को प्रसन्न करता है। रेगिस्तान में जहाँ अन्य पेड़-पौधे अपने होश-हवास खो बैठते हैं वहाँ भी इसकी मुस्कराहट में कमी नहीं आती। यह मुस्कराहट मुझे कहती है कि जीवन की कठिनाइयों को हँसते-खेलते सहकर आगे बढ़ो और दूसरों की भलाई के लिए कुछ कर के अपने जीवन को सार्थक बनाओ।

3. दादी माँ का परिवार

प्र.1. (1) (i)

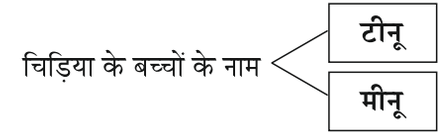

(ii)

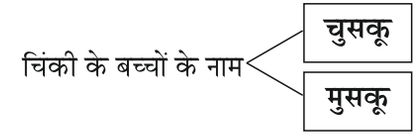

(2)

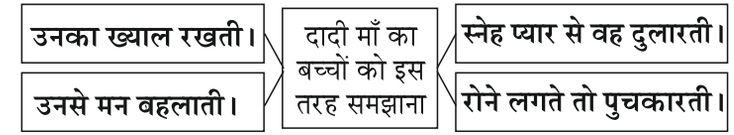

(3) (i) (1) हँसते-खेलते (2) घर-आँगन

(ii) (1) गम (2) नफरत

(4) एकता का अर्थ है एक साथ रहना। कठिन परिस्थितियों में एक-दूसरे की मदद करना। एकता हमारे जीवन में हर कदम पर महत्त्वपूर्ण है। एकजुट रहने से विपत्ती में कोई अकेले नहीं रहता। एकजुट रहनेवाले स्वयं को सुरक्षित महसूस करते हैं। साथ रहने से सबके सुझाव और मार्गदर्शन से कोई भी कार्य पुरा हो सकता है। साथ में किया काम समय पर खत्म होता हैं। जब हम एक साथ काम करते हैं तो हम प्रेरित होते है और कड़ी मेहनत करने की ठान लेते हैं। एक व्यक्ति अकेले काम करता है तो अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता हैं। एकसाथ रहने से हम मजबूत हो जाते है। अकेले व्यक्ति को कोई भी तकलीफ पहुँचा सकता हैं। एकता अपने आप में आत्मविश्वास उत्पन्न करती है।

अपने लक्ष्य को पाने के लिए, अपनी जिंदगी में सुखी और स्वस्थ जीवन बिताना हो, अपना विकास करना हो तो एक साथ रहना आवश्यक है क्योंकि एकता में बल हैं।

प्र.2. (1)

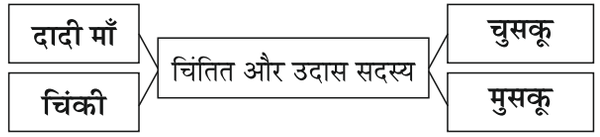

(2) (i) (1) पंछियों की एकता ने उसे हरा दिया था।

(2) उन्हें नीलू, टीनू, मीनू की चिंता हो रही थी और मन में बुरे विचार आ रहे थे।

(ii)

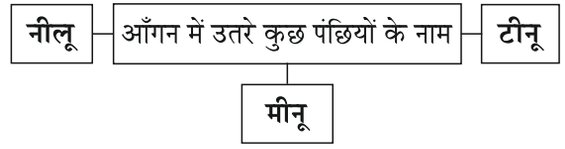

(3) (i) (1) एक (2) प्रसन्न

(ii) (1) छाया + दार = छायादार (2) दम + दार = दमदार

(4) समझदारी से हर समस्या का हल ढूँढा जा सकता है। समझदारी में ही भलाई है। किसी भी काम को करने से पहले समझदारी दिखाना जरूरी है। जल्दबाजी में सिर्फ नुकसान ही होता है। आपस में संघर्ष होते है और कोई काम सफल नहीं होता। दोनों बकरियों ने भी आपसी सूझबूझ से नदी पार कर ली थी। कोई भी निर्णय लेने से पहले अच्छी तरह सोच समझ लेना जरूरी है। समझदारी से किए हुए काम को हमेशा सफलता मिलती है क्योंकि बिना सोचे समझे कुछ भी करने से बाद में पछतावा होता हैं। जीवन में आयी कठिनाईयों, समस्याओं को समझदारी से दूर करना ही जरूरी है क्योंकि समझदारी से हम उचित निर्णय लेने में समर्थ हो सकते है।

स्वाध्याय

प्र.1. (घ) घर के आँगन में बरगद का पेड़ था।

(क) चिंकी ने भी दो बेटों का उपहार दिया।

(ख) एक साथ उड़ने को रहेंगे तैयार।

(ग) टीनू-मीनू चुसकू-मुसकू खेलने लगे।

प्र.2. (1) दादी माँ के घर के आँगन में बरगद का पेड़ था। चिड़िया ने उसपर घोंसला बनाया था और वहाँ अपने बच्चों के साथ वह रहती थी।

(2) बहेलिए के जाल में कई चिड़े-चिड़ियाँ फँसे थे। वे सब जाल के साथ उड़ गए। जाल में फँसे पंछियों की एकता देखकर बहेलिया ठगा-सा रह गया।

(3) दादी माँ सुबह उठकर घर बुहारतीं-सँवारतीं। आँगन में आसन धरतीं, खाना बनातीं, खातीं। अपने परिवारजनों से बातें करतीं।

(4) चुसकू-मुसकू चिंकी चुहिया के बच्चे थे। उनके पास पैने दाँत थे। उन्होंने अपने पैने दाँतों से जाल काटा और पंछियों को आजाद किया।

प्र.3. (अ) (1) बरगद (2) खुशहाली (3) कलरव (4) एकता (5) चरखा (6) हिलोरें (7) औरों

(आ) (1) एकता की ताकत दिखाएँगे। (2) उनका घर आबाद था।

(इ) (1) - (ग), (2) - (घ), (3) - (क), (4) - (ङ), (5) - (ख)

प्र.4. (अ) (1) घर के आँगन में (2) मुनमुन की (3) दादी माँ
(4) जाल में (5) एकता की (6) दादी माँ के घर

(आ) (1) दादी माँ समझदार और सयानी थी। ✓
(2) नीलू और चिंकी के बच्चे कभी झगड़े-टंटा नहीं करते। ✗
(3) मुनमुन के घर दादी-माँ आने वाली थी। ✗
(4) दादी-माँ की सीख रंग लाई। ✓

व्याकरण

(अ) थैलियाँ - थैली : पॉलिथिन की **थैली** का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
पंखा - पंखे : हमारी कक्षा में चार **पंखे** लगे हुए हैं।
दीवार - दीवारें : भेदभाव, नफरत की **दीवारें** गिरा दो।
राजा - राजा : **राजा** प्रजा का पालनहार कहलाता है।
वस्तुएँ - वस्तु : **वस्तु** का मूल्य उसकी उपयोगिता पर निर्भर होना चाहिए।
भेड़िया - भेड़िए : वन में लोमड़ी के साथ दो **भेड़िए** भी थे।
बहू - बहुएँ : खानदानी **बहुएँ** कुल की परंपरा का मान रखती हैं।
रोटी - रोटियाँ : अकाल के दिनों में जमींदार ने **रोटियाँ** बाँटना शुरू किया।

(आ) (1) **तुनककर बोलना** - चिढ़कर बोलना।
वाक्य : चंदा माँगने आए लोगों को रमेश ने **तुनककर बोलते** हुए भगा दिया।

(2) **अक्ल का पत्ता खोलना** - तरकीब बताना।
वाक्य : राज ने **अक्ल का पत्ता खोलते** हुए अपने दोस्तों को बुरी संगति से मुक्त किया।

(इ) (1) एकता में बल (2) परिणाम अच्छा तो सब अच्छा

(ई) (1) संज्ञा (2) सर्वनाम (3) क्रिया (4) विशेषण

लेखन कौशल (Writing Skill)

★(1) प्रकृतिद्वारा, उपहार के रूप में प्रदान किए गए साधनों को प्राकृतिक संसाधन कहा जाता है, जैसे लकड़ी, मिट्टी का तेल, पानी आदि। ये प्रकृति द्वारा हमें हमारे जीवन को आसान बनाने के लिए दिए गए हैं। लेकिन शहरीकरण, औद्योगिकरण, बढ़ती आबादी के नाम पर मनुष्य द्वारा लगातार इनका शोषण हो रहा है। अगर हमने इसे नहीं रोका तो ये संसाधन भविष्य में समाप्त हो जाएँगे। क्योंकि ये सीमित हैं।

जल : हमें पीने के लिए, भोजन बनाने, नहाने, फसल पैदा करने के लिए पानी नितांत जरूरी है। पानी की बर्बादी और जलप्रदूषण नहीं रोका गया तो हमारा भविष्य खतरे में है। हम अपनी मामूली जरूरतें भी पानी के अभाव में पूरी नहीं कर पाएँगे और अपना अस्तित्व ही मिटा देंगे।

वन : वनों में नानाविध पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, जीव-जंतु होते हैं। आज मनुष्य इन वनों की अंधाधुंध कटाई में लगा उनका बैरी बन बैठा है। इसके दुष्परिणाम साफ नजर आ रहे हैं। प्रदूषण बढ़ रहा है। बरसात में अनियमितता साफ नजर आ रही है, कहीं अति वर्षा, बाढ़, भूस्खलन हो रहा है तो कहीं सूखा। वन्य पशुओं से मनुष्य को खतरा बढ़ रहा है। इन वनों को नष्ट कर हम अपने अस्तित्व को ही चुनौति दे बैठे हैं।

वाचन जगत से :

★(1) ✦ स्वामी जी के भाषण के कुछ प्रमुख वाक्य -
✦ उठो, जागो और तब तक नहीं रुको, जब तक लक्ष्य न प्राप्त हो जाए।
✦ बस वही जीते हैं जो दूसरों के लिए जीते हैं।
✦ स्वयं पर विश्वास करो।
✦ किसी के साथ विवाद न कर हिल-मिलकर अग्रसर हो जाओ, हुंकार मात्र से दुनिया को बदल देंगे।
✦ जिस समय जिस काम के लिए प्रतिज्ञा करो, ठीक उसी समय पर उसे करना ही चाहिए, नहीं तो लोगों का विश्वास उठ जाता है।

✦ सब कुछ खो देने से ज्यादा बुरा है उस उम्मीद को खो देना, जिसके भरोसे पर हम सबकुछ वापस पा सकते हैं।

★(2) विद्यार्थी स्वयं करें।

4. देहात और शहर

प्र.1. (1)

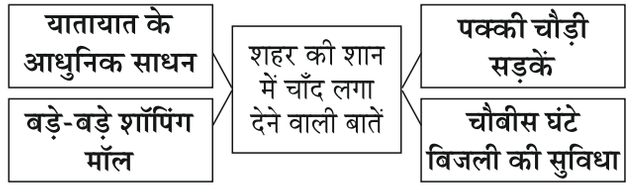

(2) (i) (1) असुविधा, बेरोजगारी, गुटबाजी, आपसी झगड़े, अशांति

(2) अशिक्षित लोग, अल्पशिक्षित लोग

(ii) (1) गाँव में पहले बहुत खुशहाली थी। चारों तरफ हरियाली थी पर अब पहले जैसे रौनक नहीं रही यह सोचकर

(2) गाँव में पीने का पानी लाने के लिए दूर-दूर तक जाना पड़ता है इसलिए

(3)

उपसर्गयुक्त शब्द	प्रत्ययुक्त शब्द
असुविधा	विकसित
बेरोजगार	उदासीन

(4) गाँव में शिक्षा, वैद्यकीय सुविधा, पीने का पानी, बिजली, यातायात के साधन, बाजार व्यवस्था इन पर ध्यान देकर बदलाव लाने की बहुत आवश्यकता है। लोक संगठन, सहकारिता, स्वच्छता का महत्त्व समझाना चाहिए।

शहर के विकास के लिए यातायात के नियमों का पालन करना, बिजली-पानी का उपयोग करते वक्त उनकी बचत का ख्याल रखना इनपर ध्यान देने की जरूरत है। शहर को स्वच्छ रखने की जिम्मेदारी हर नागरिक की है।

प्र.2. (1)

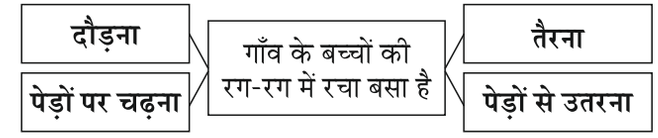

(2) (i)

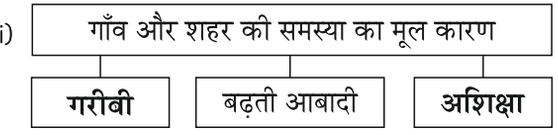

(ii)

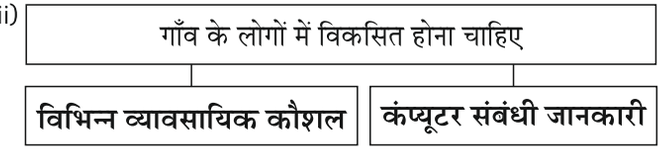

(3) (i)

	शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
(i)	व्यावसायिक	व्यवसाय	इक
(ii)	विकसित	विकास	इत

(ii) (1) जिम्मेदारियाँ (2) समस्याएँ

(4) गरीबी दूर करने के लिए बढती जनसंख्या नियंत्रित की जाए। अधिक जनसंख्या के कारण संसाधन कम पड जाते है। जो भी काम आए हमें वह काम करने में शर्म महसूस नहीं करनी चाहिए। बच्चों को अच्छी शिक्षा जो उनके कौशल्य को विकसित करनेवाली हो और उसके लिए अत्याधुनिक और अच्छी सुविधाएँ मिलने की जरूरत है। अच्छी शिक्षा के कारण वे पढ़-लिखकर अच्छी नौकरिया पा सके। सभी लोगों को रोजगार उपलब्ध कराने की आवश्यकता हैं। ग्रामीण भागों में महिलाओं के लिए भी रोजगार मिलने का अवसर देना चाहिए ताकि पूरा परिवार अपना जीवन स्वस्थ और अच्छे से बिता सके।

स्वाध्याय

प्र.1. (अ) (1) गाँव में बीमारियाँ हैं पर पर्याप्त मात्रा में सुसज्ज और अच्छे अस्पताल हैं। ✗

(2) 'मोबाईल' के माध्यम से नित-नवीन सूचनाएँ हम तक पहुँचने लगी हैं। ✓

(3) अपने गाँव को परिवार समझकर उसे विकसित करने का प्रयत्न करना होगा। ✓

(4) तुम गाँववाले यहाँ रोजगार की तलाश में आया करो। ✗

(5) खेल ग्रामीण जीवन की आत्मा है। ✓

(आ) (1) क्योंकि रोजगार की तलाश में लोग शहर जा रहे हैं।

(2) क्योंकि शहर में दिन-ब-दिन भीड़ बढ़ती जा रही है।

(3) क्योंकि पहले खुशहाली और हरियाली की जो रौनक थी वह अब नहीं रही।

(इ) (1) इमारतों के जंगल में (2) खेल

(3) अशिक्षित और अल्पशिक्षित लोग

(ई) (1) दूरध्वनि (2) स्वास्थ्य (3) ग्रामीण

व्याकरण

प्र.1. (अ) (1) चाचा - वाक्य : चाचा जी प्रकल्प में मेरा मार्गदर्शन करते हैं।

(2) बालिका - वाक्य : बालिका अब पाठशाला जाने लगी है।

(3) अध्यापक - वाक्य : अध्यापक हमें पाठ पढ़ा रहे हैं।

(4) अभिनेत्री - वाक्य : अभिनेत्री ने घमंड दिखाया।

(5) गुड्डे - वाक्य : मेरी गुड़िया से तुम्हारे गुड्डे की शादी रचाएँगे।

(6) ऊंटनी - वाक्य : ऊँटनी का दूध बहुत महँगा है।

(7) सास - वाक्य : रजनी की अपनी सास के साथ नहीं बनती।

(8) हंस - वाक्य : हंस सरोवर की शोभा बढ़ा रहे थे।

(आ) (1) पुरुष (2) बेटा (3) देवर (4) छात्रा (5) मोरनी

(6) पत्नी (7) विदुषि (8) बेटी (9) कार्यकर्ती

(इ) (1) आबादी (2) कल्याण (3) कृषि (4) ग्रामजन

(5) चिल्लपों (6) तहसील (7) विख्यात

(8) व्यथित (9) यातायात (10) रौनक

वाक्य: (1) आबादी दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है।

(2) मिल-जुलकर रहने में ही हमारा कल्याण है।

(3) गाँव में कृषि महाविद्यालय का उद्घाटन हुआ।

(4) ग्रामजन बेरोजगारी से परेशान हो उठे हैं।

(5) वाहनों की चिल्लपों से रक्तचाप बढ़ता है।

(6) नेता को अपने तहसील की भलाई में लग जाना है।

(7) देवगढ़ का आम विश्व भर में विख्यात है।

(8) महिलाओं पर अन्याय की खबरें मुझे व्यथित कर देती हैं।

(9) यातायात के आधुनिक साधन विश्व की दूरियाँ मिटाने में योगदान दे रहे हैं।

(10) त्योहार पास में आने पर बाजार में रौनक आ गई।

प्र. 2.

बोली	प्रदेश	बोली	प्रदेश
मारवाड़ी	- राजस्थान	भोजपुरी	- बिहार
कुमाऊँनी	- उत्तराखंड	बुंदेली	- हरियाणा
अवधी	- उत्तर प्रदेश	छत्तीसगढ़ी	- छत्तीसगढ़
मैथिली	- बिहार	बांगरू	- हरियाणा
मेवाती	- राजस्थान	मालवी	- राजस्थान
ब्रज भाषा	- उत्तर प्रदेश	गढ़वाली	- हिमाचल प्रदेश
खड़ी बोली	- उत्तर प्रदेश	बघेली	- मध्य प्रदेश

स्वयं अध्ययन

★ गाँव में घर पास-पास में होते हैं इसलिए यातायात के साधन न हों तो भी मिलने-जुलने में कोई दिक्कत नहीं आएगी, लेकिन उनके उत्पाद, जो वे शहर जाकर बेचते हैं, बेच नही पाएँगे और बहुत नुकसान उठाना पड़ेगा। सब्जी, अनाज, दूध आदि चीजें खराब हो जाएँगी। न उनके दाम मिलेंगे ना ही किसी की क्षुधा मिटाने में काम आएँगी।

शहरों में खेती बाड़ी होती नहीं। वहाँ गाँव से सब्जी, फल, दूध वगैरह नहीं पहुँच सकेंगे और कई मुसीबतों से वे घिर जाएँगे। महानगर में तो अलग ही समस्या होगी। दूर-दूर तक काम पर जाने वाले लोगों को यातायात के साधन न होने की वजह से काम पर पहुँचना ही मुश्किल हो जाएगा। न मंडी में सब्जी होगी न कारखानों में कच्चा माल। इन सारी बातों का असर देश की अर्थव्यवस्था पर होगा। देश का विकास थम जाएगा।

लेखन कौशल (Writing Skill)

(1) अनन्या जोशी,
286/102,
सुंदर नगर,
मलाड (प.), मुंबई।
दि. 5 नवंबर, 2022।

प्रिय मित्र नील,

सप्रेम नमस्ते।

तुम्हारा पत्र कल ही मिला। यह जानकर बहुत खुशी हुई कि तुम कक्षा में अव्वल आए। बहुत बहुत बधाई हो, मेरे दोस्त। मिठाई तो बनती है। खैर जब मिलूँगी तो सूद के साथ वसूल करूँगी। आज मैं तुम्हें कुछ और भी बताना चाहती हूँ।

पढ़ाई के साथ-साथ खेलों का भी हमारे जीवन में बड़ा महत्त्व है। खेलने से शरीर फुर्तिला बनता है। शरीर स्वस्थ रहता है और स्वस्थ शरीर में तेज दिमाग भी बसता है। हम अपने सभी कार्य सुचारू रूप से पूरे करने में सक्षम बनते हैं। खेल-कूद से मनोरंजन भी होता है और सहकारिता, अचूक निर्णयक्षमता, सूझ-बूझ जैसे गुणों का भी हमारे अंदर विकास होता है। हमारा शरीर सुंदर, सुदृढ़ बनता है। जब इतने लाभ होते हैं तो हमें खेल-कूद को भी पढ़ाई के बराबर महत्त्व देना चाहिए। उम्मीद है कि मेरी बातों से प्रभावित होकर जल्द ही टेनिस टुर्नामेंट में तुम्हें देखने का सौभाग्य मुझे मिले।

आदरणीय चाचा जी तथा चाची जी को मेरा प्रणाम कहना। दीदी को भी मेरा नमस्ते कहना।

तुम्हारी सहेली,
अनन्या

टिकट

प्रति,
नील भागवत,
24, नवी पेठ,
पुणे।

प्रेषक,
अनन्या जोशी,
286/102, सुंदर नगर,
मलाड (प.), मुंबई।

5. बंदर का धंधा

प्र.1. (1) (अ)लोमड़ी (ब) वैद्यकीय (क) घी-कुँवार (ड) कुंदन

(2) (i) (1) असत्य (2) सत्य

(ii) (1) मैं ही दीखूँ सबसे **सुंदर** ऐसी बूटी लाओ

(2) अच्छी-अच्छी जड़ी-बूटियाँ **जंगल** से वह लाता।

(3) लोमड़ी को सुंदर दिखना था, इसलिए वह बंदर के पास जड़ीबूटी माँगने आई। बंदर ने उसे घी कुँवार दोनों समय चेहरे पर लगाने की सलाह दी। ऐसा करने से लोमड़ी का चेहरा कुंदन की तरह चमकने लगेगा। बंदर ने उससे अपनी फीस भी देने को कहा। इस तरह बंदर का यह वैद्यकीय व्यवसाय खूब चलने लगा और वह मौज मनाने लगा। जंगल से वह अच्छी-अच्छी जड़ी-बूटियाँ लाने लगा।

प्र.2. (1) नरेंद्र गोयल (2) हास्य कविता

(3) बंदर बोला-घी-कुँवार तुम दोनो समय लगाओ,
चमकेगा कुंदन सा चेहरा फीस मुझे दे जाओ।

(4) कवि ने पारंपरिक उपचार पद्धति और जड़ी बूटियों से होनेवाला लाभ बताया है। मनुष्य को सुंदर दिखने का शौक तो होता ही है लेकिन यहाँ पर

लोमड़ी को भी सुंदर-चिकना बनना है यह कल्पनाही बहुत मजेदार और हँसानेवाली है। बंदर भी उसे घी-कुँवार दोनों समय चेहरे पर लगाने की सलाह देता है और सलाह की फीस भी माँगता है। इसलिए मुझे यह पंक्तियाँ पसंद है।

प्र.3. बीमारियों के इलाज में जड़ी-बूटियों का इस्तेमाल पुराने जमाने से चलता आया है। जड़ी-बूटियों में पोषक तत्त्व और औषधीय गुण दोनों होते हैं। आज के आधुनिक रहन-सहन और आपाधापी ने मनुष्य को अंदर से खोखला बना दिया है। मौसम में आनेवाले उतार-चढ़ाव से वह बीमार पड़ जाता है। मनुष्य ने अपनी बुद्धि के दम पर जीवाणु-विषाणुओं को देखने के यंत्र बना लिए परंतु नई उपचार पद्धति के दुष्परिणामों ने उसे फिर एक बार सोचने पर विवश कर दिया है। प्राचीन उपचार पद्धति के दुष्परिणाम नहीं होते बल्कि प्रकृति द्वारा वनौषधियाँ वरदान बनकर हमारी मदद करती हैं। ये घास-पात जैसी दिखती हैं पर अपने विशेष गुणों के कारण रोग निवारण, आरोग्यवर्धन एवं परिशोधन के काम आती हैं। ये औषधियाँ हानिरहित, निरापद होने के कारण सबसे सुरक्षित उपचार पद्धति हैं। आज इसीलिए लोगों ने जड़ी-बूटियों में दोबारा दिलचस्पी लेना शुरू किया है।

व्याकरण

(अ) (1) टूटा-फूटा (2) कुरसी-मेज (3) सुबह-शाम
(4) चिकना-सुंदर (5) अच्छी-अच्छी

(आ) (1) नृत्य (2) शुल्क

(इ) (1) कुरसियाँ (2) जड़ें (3) पत्ता (4) भालू

(ई) (1) वानर (2) सवेरा (3) ज्वर (4) वन, कानन

6. 'पृथ्वी' से 'अग्नि' तक

प्र.1. (1) (ब) वैज्ञानिकों ने मिसाइल को 1 मई 1989 को प्रक्षेपण के तैयार कर लिया।

(ड) कंप्यूटर पर एक "होल्ड" का संकेत दिखाई पड़ा।

(अ) प्रक्षेपण एक बार स्थगित करना पड़ा।

(क) डॉ. ए. पी. जे. कलाम ने डी. आर. डी. एल् के सदस्यों को संबोधित किया।

(2) (i) तकनिकी खराबियों के कारण 'अग्नि' का प्रक्षेपण फिर एक बार स्थगित करना पड़ा।

(ii) महीने के खत्म होने से पहले सदस्य वापस मिलेंगे क्योंकि डॉ.कलाम जी के वक्तव्य ने वैज्ञानिकों में 'अग्नि' के कामयाब प्रक्षेपण के प्रति विश्वास जगा दिया था।

(3) (i) (1) आसान (2) जीत

(ii) (1) कामयाबी (2) आह्वान

(4) सच है बड़े अवसर आते है तो अपने साथ कुछ चुनौतियाँ लेकर आते हैं लेकिन उन चुनौतियों का सामना करते हुए निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए। कोशिश करने से चुनौती को अवसर में बदलने में समय नहीं लगेगा और लक्ष्य की प्राप्ती होगी। किसी कार्य में सफलता आसानी से नहीं मिलती। उसमें कामयाब होने के लिए चुनौतियों का सामना करना ही पड़ता है। बड़े अवसर और चुनौतियाँ साथ साथ ही चलती है। कड़ी मेहनत और हिम्मत से चुनौतियों का स्वागत करना चाहिए।

प्र.2. (1) (ii) सैकड़ों कर्मचारियों ने लगातार काम करके प्रणाली का काम केवल दस दिन में पूरा कर डाला।

(iv) मौसम संबंधी आँकड़े रुक-रुककर आने लगे और दस मिनट के अंतराल में उनकी बाढ़-सी आ गई।

(i) क्या हम 'अग्नि' प्रक्षेपण में कल सफल होंगे? यह सवाल हमारे दिमागों में सबसे ऊपर था।

(iii) रक्षामंत्री ने डॉ. कलाम से उपहार में क्या चाहिए पूछा।

(2) (i)

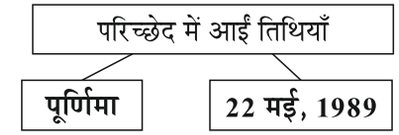

(ii) (1) ज्वार के कारण लहरें किनारों से टकराकर और अधिक शोर मचा रही थी।

(2) अग्नि की कामयाबी का जश्न मनाने के लिए रक्षामंत्री डॉ. अब्दुल कलाम को उपहार देना चाहते थे।

(3)

शब्द	मूल शब्द	उपसर्ग	प्रत्यय
स्वीकार्यता	कार्य	स्वी	ता
उपहार	हार	उप	-
प्रक्षेपण	क्षेपण	प्र	-
खामोशी	खामोश	–	ई

(4) गर्मी, जाड़ा और बरसात जैसे विभिन्न मौसम हैं।

गर्मी से बचने के लिए हमें पानी अधिक मात्रा में पीना चाहिए और घर से बाहर निकले तो अपने साथ पानी रखना जरूरी है। गर्मियों के मौसम में तरबूज, ककड़ी खाना स्वास्थ के लिए लाभदायक है। पेय पदार्थ में गन्ने का रस, निंबू शरबत, छास पीना चाहिए। ज्यादा तेल, मसाले वाला भोजन नहीं खाना चाहिए जिससे पाचन की समस्या का सामना करना पड़े। गर्मी में बाहर निकले तो सिर ढकने के लिए रूमाल, टोपी का उपयोग करना चाहिए। तेज धूप के कारण त्वचा पर बहुत परिणाम होता है इसलिए सुती कपडे पहनना जरूरी है। जितना हो सके धूप में बाहर कम ही निकलें।

ठण्डी के मौसम से बचने के लिए गर्म कपड़े और मौजे पहनने चाहिए। एड़िया और होठों को फटने से बचाए। त्वचा की नमी बनाए रखने के लिए तेल या क्रीम का प्रयोग करना चाहिए। पौष्टिक नाश्ता करना जरूरी है। खाने में ऊर्जा देनेवाला भोजन खाना चाहिए। ताजे फल, हरी सब्जियाँ, दूध का सेवन करना चाहिए। सुबह उठकर व्यायाम करना चाहिए।

बरसात में डेंगू, मलेरिया, डायरीया जैसी बीमारियाँ फैलती है इसलिए घर और घर के आसपास की जगह साफ रखनी चाहिए। घर के आसपास पानी जमा होने न दें। क्योंकि इन्ही दिनों मच्छर ज्यादा पनपते हैं।

इस तरह सावधानी बरतेंगे तो मौसम की मार से बचेंगे। बारिश में भीगना नहीं चाहिए। भीगकर आए तो तुरंत गीले कपड़े बदलने चाहिए। हमेशा अपने साथ रेनकोट या छाता रखना जरूरी है। घर में बनाया हुआ भोजन ही खायें। बरसात में रास्ते पर खाना मतलब बीमारी को दावत!

स्वाध्याय

प्र.1. (अ) (1) 'पृथ्वी' प्रक्षेपण के लिए **श्रीहरिकोटा** अंतरिक्ष केंद्र में विशेष सुविधाएँ स्थापित की।

(2) सिर्फ छह सौ **सेकंड्स** की भव्य उड़ान ने हमारी सारी थकान को एक पल में धो डाला।

(आ) (1) परियोजना (2) गतिविधियाँ (3) लक्ष्य

प्र.2. (1) श्रीहरीकोटा अंतरिक्ष केंद्र से 25 फरवरी,1988 को 'पृथ्वी' उपग्रह छोड़ा गया। यह देश के रॉकेट विज्ञान के इतिहास में एक युगांतरकारी घटना थी। देश एक आत्मनिर्भर देश के रूप में उभर आया। इस तरह सामर्थ्यशाली अंतरिक्ष उद्योग और व्यवहार्य मिसाइल आधारित सुरक्षा प्रणालियों ने भारत को चुनिंदा राष्ट्रों के समूह में पहुँचा दिया।

(2) 19 अप्रैल, 1989 को 'अग्नि' का प्रक्षेपण निर्धारित किया गया था। लेकिन तकनिकी खराबियों के कारण उन्हें प्रक्षेपण स्थगित करना पड़ा। टीम के सदस्य सदमे में थे। उनका दुख दूर करने गए डॉ.ए.पी.जे. कलाम ने उनके साथ अपना अनुभव बाँटा। उन्होंने कहा कि, उनका प्रक्षेपणयान तो गिरकर समुद्र में खो गया था जिसकी वापसी भी सफलता से हुई। आपकी मिसाइल अभी तक आपके सामने है और आपने ऐसा कुछ भी नहीं खोया है जिसे एक-दो हफ्तों में सुधारा न जा सके।

(3) डॉ. कलाम जी के प्रोत्साहन पर वैज्ञानिकों ने दिन-रात मेहनत की और 1 मई, 1989 को 'अग्नि' मिसाइल को प्रक्षेपण के लिए तैयार कर लिया। लेकिन स्वचलित कंप्यूटर जाँच अवधि के दौरान टी-10 सेकंड पर एक 'होल्ड' का संकेत दिखाई पड़ा। इसलिए 'अग्नि' का प्रक्षेपण स्थगित करना पड़ा।

(4) 22 मई, 1989 को 'अग्नि' प्रक्षेपण निर्धारित किया गया था। उस की पहली रात में रक्षामंत्री महोदय ने डॉ. कलाम से पूछा, ''कलाम! कल तुम

'अग्नि' की कामयाबी का जश्न मनाने के लिए मुझसे क्या उपहार चाहोगे?'' इस तरह एक मामूली सा सवाल रक्षामंत्री ने डॉ. कलाम जी से पूछा।

प्र.3. (1)

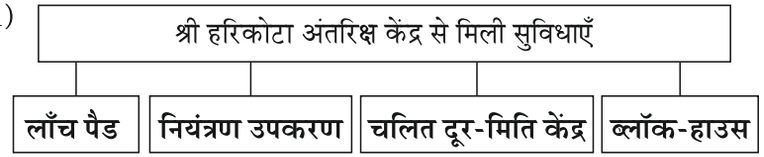

(2)

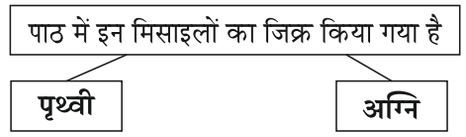

अध्ययन कौशल

★ अपने स्वास्थ का ख्याल रखते हुए मैं सुबह छह बजे उठता हूँ। अपने नित्यकर्म करने के बाद आधा घंटा व्यायाम करता हूँ। नहाने के बाद नाश्ता और दूध पीकर पढ़ने बैठता हूँ। पाठशाला में दिया हुआ गृहकार्य पूरा कर पहले दिन पाठशाला में पढ़ाए गए पाठ दोहराता हूँ। 9.00 बजे पाठशाला जाता हूँ। 4.30 बजे तक पाठशाला में पढ़ाई-लिखाई होती है। 4.30 बजे पाठशाला छूटती है। घर आकर हाथ-पैर धोने के बाद माँ ने किया नाश्ता करता हूँ। फिर थोडी देर साईकिल चलाने जाता हूँ या कभी दोस्तों के साथ खेलता हूँ। खाना खाकर अपने माता-पिता, भाई के साथ गपशप करता हूँ। थोडी देर दूरदर्शन के अच्छे कार्यक्रम देखता हूँ। 9.30 बजे सो जाता हूँ। छुट्टी के दिन मेरी इस दिनचर्या में थोडा बदलाव आ जाता है।

व्याकरण

प्र.1.

(1) रमेश ने <u>विनम्र</u> होकर आज्ञापालन किया।

(2) छात्र में <u>नम्रता</u> होनी ही चाहिए।

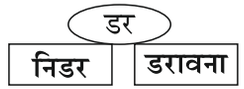

(1) नील <u>निडर</u> है।

(2) हमने एक <u>डरावना</u> दृश्य देखा।

(1) सीमा ने <u>निर्जल</u> व्रत रखा।

(2) सरोवर में <u>जलज</u> शोभायमान थे।

(1) मेरी निद्रा भंग करने का <u>दु:साहस</u> किसने किया?

(2) देश के बालक <u>साहसी</u> हैं।

(1) <u>असत्य</u> कभी न बोलो।

(2) मामले के तह तक जाकर ही <u>सत्यता</u> समझ में आएगी।

7. जहाँ चाह, वहाँ राह

प्र.1. (1)

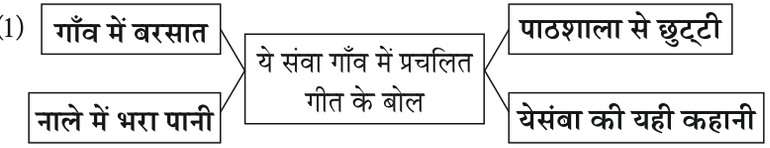

(2) (i) (1) असत्य (2) सत्य

(ii) **गाय** — ये नाला पार कर खेत में पहुँचते — **बैल**

(3) (i) (1) अनुपस्थित (2) संभव

(ii) (1) विद्यार्थी (2) बस्ती

(4) पाठशाला में अनुपस्थित रहने के कारण विद्यार्थियों की पढ़ाई पर बुरा असर पड़ता है। अनुपस्थित विद्यार्थी अन्य विद्यार्थियों से पढ़ाई में पीछे छुट जाते है। जिस दिन अनुपस्थित रहते है उस दिन की पढ़ाई दूसरे दिन करनें में समय चला जाता है। अध्यापक जो पाठशाला में पढ़ाते है वह समझने में अनुपस्थित बच्चों को दिक्कत होती है और विद्यार्थियों की सोचने समझने की शक्ती कम हो जाती है। उनको अनुपस्थित रहने की आदत हो जाती है। उनका आत्मविश्वास कम होता है। पढ़ाई से ध्यान हट जाता है। अच्छी श्रेणी लाने वाले विद्यार्थी भी वार्षिक परीक्षा में पीछे रह जाते है।

प्र.2. (1)

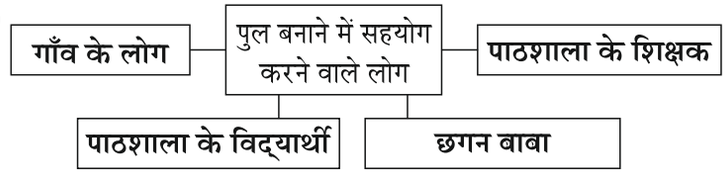

(2) (3) गाँव के लोग सहायता के लिए आगे आए।

(1) सामग्री खरीदने के लिए आवश्यक राशि जमा हुई।

(4) पत्थर इकट्ठे किए गए।

(2) बंजर जमीन से मिट्टी खोदी गई।

(3) (i) (1) पाठशालाएँ (2) ईंट

(ii) (1) उपजाऊ (2) अंत

(4) भारत की अनेक महत्त्वपूर्ण परंपराओं में से श्रमदान भी एक परंपरा है। सामूहिक श्रमदान का अर्थ है नि:स्वार्थ होकर एकजूट से जनकल्याण का कार्य करना। सामूहिक श्रमदान से लोगों के बीच आपसी सहयोग, परोपकार, त्याग, दया, उदारता की भावना उत्पन्न होती है और हमारा शारीरिक और मानसिक विकास होता है। हममें आत्मविश्वास का निर्माण होता है। सामूहिक श्रमदान से हम गाँव की समस्याओं का समाधान कर के उन्हे विकसित और खुशहाल बना सकते है जैसे कुएँ खोदना, स्वच्छता, वृक्षारोपण संबंधी कार्य आदि। सामूहिक श्रमदान से सबकुछ संभव कर सकते है। समाज, गाँव और शहर को पूर्ण शक्तिशाली बनाने में सामूहिक श्रमदान से सहायता मिल सकती है।

स्वाध्याय

प्र.1. (अ) (1) यह वाक्य गुरुजी ने विद्यार्थियों से कहा।

(2) यह वाक्य आशीष ने अपने मित्र-सहेलियों से कहा।

(3) यह वाक्य जुई ने तुषार से कहा।

(आ) (1) अनुपस्थिति (2) माहौल (3) सामग्री

प्र.2. (अ) (1) क्योंकि धुआँधार बरसात हो रही थी।

(2) क्योंकि बरसात के कारण नाले में पानी भरा था और नाले को लाँघना विद्यार्थियों के लिए संभव नहीं था।

(3) क्योंकि दामिनी ने विश्वास के साथ कहा था कि हर समस्या का निदान संभव है और सब मिलकर विचार करेंगे तो कोई न कोई रास्ता अवश्य मिलेगा और बरसात में भी वे पाठशाला जा पाएँगे।

(आ) (4) विद्यार्थियों ने छोटे-छोटे समूह बनाकर प्रकल्प पर काम करना शुरू कर दिया।

(3) पाठशाला के शिक्षक और गाँव के लोग सहायता के लिए आगे आए।

(1) बंजर जमीन से मिट्टी खोदी गई।

(2) विद्यार्थी हँसते-खेलते पुल से पाठशाला की राह जाने लगे।

प्र.3. (1) कहानी का शीर्षक है 'जहाँ चाह, वहाँ राह' जो सर्वथा सार्थक है। कहानी में छोटे बच्चों ने नाले पर पुल बनाने का निश्चय किया। यह एक असंभव लगने वाला कार्य था जो उनके हौसले के कारण संभव हुआ और उनकी पाठशाला नियमित जाने की इच्छा पूरी हुई। मनुष्य बुद्धिमान है और हर समस्या का हल वह ढूँढ़ सकता है क्योंकि 'कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।"

(2) यह कहानी येसंबा गाँव के बच्चों की है जो पाठशाला में पढ़ते थे। येसंबा गाँव में एक नाला था जो गाँव को दो भागों में बाँट देता था। एक तरफ बस्ती और दूसरी तरफ खेत और पाठशाला थी। बरसात के दिनों में नाले में पानी भर जाता। तब बड़े-बुजुर्ग अपने गाय-बैलों के साथ खेत में पहुँच जाते पर बच्चों को नाला लाँघना मुश्किल हो जाता और वे पाठशाला नहीं जा पाते।

एक दिन बच्चे पाठशाला नहीं जा पाए थे और बरगद के पेड़ के चबूतरे पर बैठकर बातें कर रहे थे। तब उन्होंने अपनी समस्या हल करने के बारे में विचार किया। उन्होंने नाले पर पुल बनाने का निश्चय किया। उनके हौसले को देखकर गाँव के लोग और पाठशाला के शिक्षक सहायता के लिए आगे आए। पुल के लिए धन जमा किया और अंतत: उनकी वर्षों की कठिनाई दूर हो गई। नाले पर केवल पंद्रह दिनों में ग्रामीणों और विद्यार्थियों के

सामूहिक श्रमदान से पुल बना। एकता, संगठन और श्रमदान के कारण असंभव को उन्होंने संभव कर दिखाया।

प्र.4. (1)

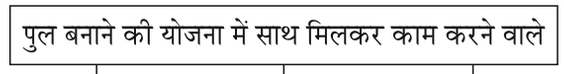

(2)

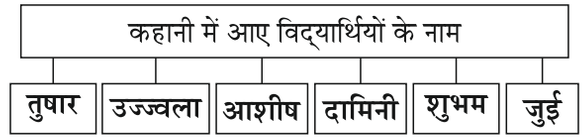

प्र.5. **घर :** छुट्टी का दिन था। सुबह जल्दी आँख खुल गई थी। माता-पिता और दीदी सब सोए थे। तभी मैंने सोचा आज मैं सबके लिए चाय बनाऊँगा और फिर उन्हें जगाऊँगा। मैंने अपनी योजना के अनुसार चाय चढ़ा दी। पर दूध फट गया था। अब दूधवाला दूध ला देगा तभी मैं सबको चाय पिला सकूँगा। मैंने लेमन-टी के बारे में पढ़ा था । फिर क्या? मैंने सब को लेमन-टी पिला दी। घर में सबने मेरी तारीफ की और मुझे लगा मैंने आज बड़ा काम कर दिया।

विद्यालय : मेरा हस्ताक्षर ठीक-ठाक है। सुंदर नहीं पर हर कोई आसानी से पढ़ सकता है। विद्यालय में जब हमारी वर्ग शिक्षिका ने फलक लेखन के लिए मुझे चुना तो मैं बहुत प्रसन्न हुआ। मैंने उस हफ्ते भर में कई किताबों से पढ़कर सुवचन ढूँढ़े और फलक पर लिखे। मेरे इस कार्य के लिए मुझे शाबाशी मिली।

परिवेश : अपना परिवेश साफ-सुथरा रखना हमारा कर्तव्य है। और 'स्वच्छ ग्राम-स्वस्थ ग्राम' नारा तो चारों ओर सुनाई देता है। मैंने अपने परिवेश में एक दल बनाया और हमारे दल के बच्चे किसी को भी सड़क पर कूड़ा नहीं फेंकने देते।

त्योहार : इस बार हमने दीवाली के त्योहार पर अनाथालय में जाकर बच्चों को मिठाई और नए कपड़े बाँटे। मिठाई और कपड़े पाकर उन बच्चों के चेहरें पर मुस्कराहट आई जो हमारे दिल को छू गई।

खोजबीन :

★ 'कंधे से मिलते हैं कंधे और कदमों से कदम मिलते हैं, जब चलते हैं हम ऐसे तो दिल दुश्मन के हिलते है।'

★ ऐसी इस भारतीय सेना के तीन रेजिमेंट हैं - (1) थलसेना (2) नौसेना और

(3) वायु सेना इसके अलावा नाभिकीय कमान प्राधिकरण भी एक विभाग है और तटरक्षक दल भी है।

★ **भारतीय सेना के पद :** तीनों विभागों के मुख्य राष्ट्रपति होते हैं।

सेना के पद - (1) फिल्ड मार्शल (2) जनरल (3) लेफ्टिनंट जनरल (4) मेजर जनरल (5) ब्रिगेडियर (6) कर्नल (7) लेफ्टिनंट कर्नल (8) मेजर (9) कैप्टन (10) लेफ्टिनंट (11) सूबेदार मेजर (12) सूबेदार (13) नायब सूबेदार (14) हवालदार, नायक और लांस नायक

इनके पोशाकों के रंग अलग-अलग हैं।

थलसेना के पोशाक का रंग खाखी है और उसपर हरे रंग के धब्बे हैं।

नौसेना की पोशाक सफेद रंग की है और वायुसेना की पोशाक आसमानी नीले रंग की है।

व्याकरण

प्र.1.

उद्देश्य	विधेय
(1) हिमालय	देश का गौरव है।
(2) महासागर	अपने देश के चरण पखारता है।
(3) निखिल	कश्मीर घूमने गया था।
(4) मुंबई	देश की आर्थिक राजधानी है।
(5) परिश्रम	सफलता की कुंजी है।

प्र.2.(अ)

हिंदी	मराठी	हिंदी	मराठी
गाँव	गाव	पाठशाला	पाठशाळा
खेत	शेत	पाँच	पाच
फीट	फुट	छुट्टी	सुट्टी
रास्ता	रस्ता	ज्यादा	जास्त
शक्ति	शक्ती	पुल	पूल
हाथ	हात	तालियाँ	टाळ्या
पंद्रह	पंधरा	व्यक्ति	व्यक्ती

(आ) जहाँ चाह वहाँ राह - **अर्थ :** इच्छा होने पर मार्ग मिलता है।

वाक्य - अंततः आतंकवादी के चंगुल से हम बच निकले; सच कहते हैं **जहाँ चाह वहाँ राह**।

लेखन कौशल (Writing Skill)

प्र.1. इसी वर्ष की घटना है। फरवरी में हमारे विद्यालय का वार्षिक महोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया गया। मातोश्री प्रमिला बेन सभागृह में मशहूर कलाकार समीर वाजपेयी ने पधारकर अध्यक्षपद विभूषित किया। इस अवसर पर कई गणमान्य अतिथि, पाठशाला के आजी-माजी छात्र एवं अभिभावक उपस्थित थे। गणेश वंदना एवं सरस्वति वंदना से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। छठी कक्षा के छात्रों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

तत्पश्चात हमारे विद्यालय के निरीक्षक शर्मा सर ने अध्यक्ष महोदय का परिचय दिया और गुलदस्ता देकर सम्मानित किया। अध्यक्ष महोदय के करकमलों द्वारा होनहार छात्रों को पुरस्कार दिए गए।

इस अवसर पर अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम रखे गए। नृत्य, संगीत, एकांकी आदि द्वारा भारतीय संस्कृति की झाँकियाँ प्रस्तुत की गई। अध्यक्ष महोदय ने कार्यक्रम की भूरी-भूरी प्रशंसा की और विद्यार्थियों के सुनहरे भविष्य की कामना करते हुए हमें शुभाशीष दिया। धन्यवाद यापन के बाद राष्ट्रगीत गाया गया जो मैंने मेरे साथियों के संग प्रस्तुत किया। इसके साथ ही इस रंगारंग कार्यक्रम का समापन हुआ।

वाचन जगत से

(1) गणतंत्र दिवस पर प्रधान मंत्री के हाथों साहसी बालकों को सम्मानित किया जाता है। उनको हाथी पर बिठाकर उनका जुलूस निकाला जाता है। चारू और चिन्मय ऐसे ही वीर बालक हैं।

एक दिन दोपहर के वक्त वे दोनों अपनी माँ के साथ लोकल ट्रेन से कहीं जा रहे थे। रास्ते में दो बदमाश गाड़ी में चढ़े और एक ने एक साठ साल की वृद्धा का बैग झपट लिया। दूसरे ने चाकू दिखाकर बच्चों की माँ का बैग छीना। चारू ने तब बदमाशों के हाथों से अपनी माँ का बैग छीन लिया। इसपर बदमाश ने चारू के बाल खींचे, उसे पीटा पर चारू ने बैग नहीं छोड़ा। चिन्मय ने उस बदमाश

के बाल खींचे और उसे काट लिया जिसके कारण बदमाश के हाथ से चाकू छूट गया। चिन्मय ने झट चाकू उठाया और ट्रेन से बाहर फेंक दिया। दोनों भाई-बहनों को चोटें आईं पर वे उन बदमाशों से लड़ते रहे। इसी मूठभेड़ में वृद्धा का बैग भी बदमाश के हाथ से छूट गया जिसे चिन्मय ने पकड़ लिया। हालात बेकाबू होते देख अगला स्टेशन आते ही बदमाश भाग गए। इस तरह दोनों बालकों ने मिलकर दो-दो बदमाशों के दाँत खट्टे किए।

(2) विद्यार्थी स्वयं करें।

प्रकल्प

अध्ययन कौशल्य

★

रोग	टीका
तपेदिक (टीबी)	बी.सी.जी
डिप्थीरिया	डी.टी.पी या डी.पी.टी
खसरा	एम्.एम्.आर.
रोटावायरस	रोटावायरस
टायफॉइड (मोतीझरा)	टायफॉइड
रुबेला	एम्.एम्.आर.
हैपेटाइटिस ए	हैपेटाइटिस ए.
टिटनस	डी.टी.पी. या डी.पी.टी.

8. जीवन नहीं मरा करता है।

प्र.1. (1) - आ, (2) - ई, (3) - अ, (4) - इ

(2) (i) **दुःखी होना।** — सपनों के टूट जाने का परिणाम — **आँसू बहाना।**

(ii) (1) आँसू - क्या नीलाम हुए तो तपस्या पूरी हुई?

(2) माला - क्या बिखर गई तो समस्या हल हुई?

(3) जिनके सपने टूट गए हैं उन्हें कवि समझा रहे हैं,

इस तरह छिप-छिपकर आँसू बहाने वालो, ये आँसू मोतियों की तरह

अनमोल हैं, इन्हें व्यर्थ मत लुटाओ, क्योंकि कुछ सपनों के मर जाने से जीवन मरा नहीं करता है। आँसूओं की माला बिखेर देने से समस्या हल नहीं होती। जीवन में आने वाली कठिनाइयाँ खुद ही हल नहीं होती। आँसू अगर नीलाम हो गए तो समझो कि तपस्या पूरी हुई। अपने रुठे दिनों को मनाने वालो, फटी हुई कमीज को सिलाने वालो कुछ दीपों के बुझ जाने से आँगन नहीं मरता है। आँगन में रोशनी लेकर नए दीपक आते ही हैं।

प्र.2. (1)

'अ'	'आ'
(1) गगरियॉ	पनघट
(2) उपवन	माली
(3) खिड़की	धूल
(4) किश्तियाँ	तट

(2) (i) (1) असत्य (2) सत्य

(ii) तम की **उमर** बढ़ाने वालो! लौ की **आयु** घटाने वालो!

(3) पनघट पर कितनी ही गगरियाँ फूटी परंतु पनघट ने फूटी हुई गगरियों की चिंता नहीं की। कितनी ही बार पानी में किश्तियाँ डूब गई लेकिन किनारे पर जीवन की चहल-पहल बनी रही। ऐ अंधकार की उम्र बढ़ाने वालो और ज्योति की आयु घटाने वालो, याद रखो कि पतझड़ कितनी भी कोशिश कर ले परंतु उपवन मरा नहीं करता, उसमें बहार फिर से आती ही है।

प्र.3. (1) गोपालदास सक्सेना 'नीरज'

(2) 'चंद खिलौनों के खोने से बचपन नहीं मरा करता है।"

(3) यह पंक्ति मुझे सबसे अच्छी लगी। जीवन की सच्चाई इसमें छिपी है। खिलौना टूटने पर रोना तो खूब आता है पर नया खिलौना मिलने पर टूटे हुए खिलौने को बालक भूल जाता है वैसे ही जीवन में उम्मीदों के बँधने टूटने का गम और खुशी समाहित रहती है। उम्मीद टूटने पर गम में डूबे हम फिर से नई उम्मीद के जागने पर उत्साह के साथ आगे बढ़ते हैं।

(4) कालचक्र निरंतर गतिमान है। समय कभी किसी के लिए रुकता नहीं है। हमारे कुछ सपने पूरे नहीं हुए तो जीवन खत्म नहीं होता। हमें नई उम्मींद के साथ जीवन में आगे बढ़ना चाहिए। आँसू समस्याओं का हल नहीं होता। जीवन में सुख-दु:ख तो आते ही है, जीवन में असफल हुए तो जीवन रुकता नहीं। यह संदेश मिलता है।

स्वाध्याय

प्र.1. (अ) (1) पतझर के मौसम में पेड़ के पत्ते झर जाते हैं और उपवन मुरझा जाता है। परंतु पेड़-पौधों की शाखाओं मे फिर से बहार देखने की इच्छा जीवित होती है। वह इच्छा उपवन को मरने नहीं देती और वसंत ऋतु के आते ही उपवन फिर से पल्लवित हो जाता है।

(2) पनघट पर औरते पानी भरने आती हैं। उनकी गगरियाँ मिट्टी की होती हैं जो लंबे समय तक नहीं टिकतीं इसलिए फूट जाती हैं। फूटने पर औरतें नई गगरियाँ ले आती हैं और पानी ले जाती हैं। गगरियों के फूटने की चिंता न पनघट करता है न औरतें। पनघट पर चहल-पहल वैसी ही बनी रहती है।

(3) इस धरती पर कुछ भी नष्ट नहीं होता, केवल उसका रूप बदल जाता है। जिस तरह किताब पुरानी हो जाती है तो उसपर नया आवरण चढ़ाकर उसे नया बना देते है वैसे ही हमारा जीवन भी शाश्वत है। समस्याओं के आने से वह खत्म नहीं होता। काल चक्र निरंतर गतिमान है और हमें इस सच्चाई के साथ जीना है, आगे बढ़ना है।

(आ) इस कविता में कवि 'नीरज' जी ने हमें विविध उदाहरण देकर जीवन की शाश्वतता की ओर संकेत किया है। हम जीवन में कई सपने देखते हैं। सपने पूरे होते हैं तो हमें जीवन सुखमय लगता है और सपने टूट जाने पर हम भी टूट कर बिखर जाते हैं। कवि हमें समझा रहे हैं कि आँसू बहाने से कभी समस्या का हल नहीं निकलता। जीवन में सुख और दुख दोनों आते ही हैं। अपनों द्वारा ही हमारे साथ छल होता है और हमारी असफलता पर खिल्ली भी उन्हीं द्वारा उड़ाई जाती है। अपनों की खोल से बाहर निकलकर वे पराए हो जाते हैं पर जीवन रुकता नहीं।

(इ) निम्न पंक्तियाँ जीवन की शाश्वतता बताती हैं।

* कुछ सपनों के मर जाने से जीवन नहीं मरा करता है।
* कुछ दीपों के बुझ जाने से आँगन नहीं मरा करता है।
* कुछ खिलौनों के खोने से बचपन नहीं मरा करता है।
* लाख करे पतझर कोशिश पर उपवन नहीं मरा करता है।
* कुछ मुखड़ों की नाराजी से दर्पन नहीं मरा करता है।

अध्ययन कौशल

★ सौरऊर्जा वह ऊर्जा है जो सीधे सूर्य से प्राप्त की जाती है। सौरऊर्जा ही मौसम एवं जलवायु में परिवर्तन लाती है। यह ऊर्जा ही धरती पर सभी प्रकार के जीवन (पेड़-पौधे, जीव-जंतु आदि) का सहारा है।

वैसे तो सौरऊर्जा के विविध प्रयोग किए जाते हैं। किंतु सौरऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में बदलना अहं है। सौरऊर्जा जो रोशनी और उष्मा दोनों रूपों में प्राप्त होती है और कई प्रकार से उपयोग में लाई जाती है। सौर उष्मा का उपयोग अनाज को सुखाने, खाना पकाने, पानी उबलना, पानी शुद्ध करने के लिए तथा बिजली बनाने के लिए किया जाता है।

इसके प्रयोग में खामियाँ भी है। बरसात के दिनों में जब सूर्य किरणें कम मात्रा में मिलती है तो उसका परिणाम उत्पाद पर होता है। फिर भी सौरऊर्जा एक ऐसी ऊर्जा है जिसका स्त्रोत निरंतर मिलता रहेगा, अन्य ऊर्जा स्त्रोतों की तरह नष्ट नहीं होगा।

व्याकरण

भाषा की ओर

प्र.1. (1) कामायनी (महाकाव्य) कवि जयशंकर प्रसाद।

(2) विशाखा लंदन से दिल्ली आती है [हवा जैसी.] आने की सूचना नहीं देती।

(3) बालभारती
सुलभभारती हिंदी की पुस्तकें हैं।

(4) किसी दिन हम भी आपके ^ आएँगे।

मेरी कलम से

★

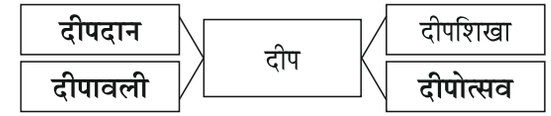

अभ्यास - 1

★

संज्ञा शब्द	सर्वनाम शब्द	विशेषण शब्द	क्रिया शब्द
पेड़ अमित प्यास	हम कोई कौन	चार मीठे थोड़ा	बैठना पिलाना गिरना

संज्ञा शब्द	भेद	वाक्य
पेड़	जातिवाचक संज्ञा	पेड़ की छाया में पंछी बैठे हैं।
अमित	व्यक्तिवाचक संज्ञा	अमित दादाजी को पानी दे रहा है।
प्यास	भाववाचक संज्ञा	दादाजी को प्यास लगी है।

सर्वनाम शब्द	भेद	वाक्य
हम	पुरुष वाचक सर्वनाम	हमने पेड़ पर घरौंदा देखा।
कोई	अनिश्चय वाचक सर्वनाम	कोई गा रहा है।
कौन	प्रश्नवाचक सर्वनाम	पेड़ पर कौन बैठा है?

विशेषण शब्द	भेद	वाक्य
चार	संख्यावाचक विशेषण	पेड़ पर चार पंछी बैठे हैं।
मीठे	गुणवाचक विशेषण	आम मीठे हैं।
थोड़ा	अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण	दादाजी थोड़ा पानी पीजिए।

क्रिया शब्द	भेद	वाक्य
बैठना	अकर्मक क्रिया	बच्चे पेड़ के नीचे बैठे हैं।
पिलाना	प्रेरणार्थक क्रिया	बच्चे ने दादाजी को पानी पिलाया।
गिरना	सहायक क्रिया।	आम नीचे आ गिरा।

पुनरावर्तन - 1

प्र.1. पाठशाला ... लालच ... चम्मच ... चतुर ... रजत ... तरफ ... फसल

प्र.2.

भारत	अंतत:	पृथ्वी	जादू	प्रणाली
सामग्री	लहरें	रोजगार	यातायात	क्रांति
अगस्त	उन्नति	हालाँकि	आँगन	मुक्ति
उंगली	चाँदनी	घोंसला	होशियार	विश्वास

उचित क्रम :

स्वर : अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ
ओ औ अं अ: अँ ऑ

प्र.3.

व्यंजन :

क	ख	ग	घ	ङ		
च	छ	ज	झ	ञ		
ट	ठ	ड	ढ	ण	ड़	ढ़
त	थ	द	ध	न		
प	फ	ब	भ	म		
य	र	ल	व	श		
ष	स	ह	ळ			
क्ष	ज्ञ	त्र	श्र			

प्र.4.

भव्य प्रदर्शनी

'चित्रकला हुनर की पहचान
चित्रकला प्रदर्शनी की शान'

अपनी कला को लेकर उड़ान भरो
क्षणभर की भी देरी न करो

* पाठशाला में पढ़ने वाले छात्रों के चित्र आमंत्रित हैं।
* चित्र चित्रकला की किसी भी शैली में हो सकता है - छाया चित्र, व्यक्तिचित्र इ.
* छात्र अपने प्रधानाचार्य के प्रमाणपत्र के साथ अपना चित्र प्रदर्शनी में दें।

अंतिम तिथि - 30 नवंबर 2022

संपर्क करें - श्री. मधुकर सावंत (चित्रकला शिक्षक)
विवेक विद्यालय, मलाड (प.)
मुंबई।

टेलीफोन - 0222×××××××

उपक्रम

(1) **हिंदी सुविचार -**

* दूसरों को सहयोग देना ही उन्हें अपना सहयोगी बनाना है।
* स्वास्थ्य सबसे बड़ी दौलत है,
संतोष सबसे बड़ा खजाना है,
आत्मविश्वास सबसे बड़ा मित्र है।
* हार और जीत हमारी सोच पर निर्भर है,
मान लिया तो हार और ठान लिया तो जीत !
* मंजिल मिले ना मिले यह तो मुकद्दर की बात है,
हम कोशिश भी ना करें यह तो गलत बात है।
* खुशनसीब हैं वे जो वतन पर मिट जाते हैं,
मरकर भी वे अमर हो जाते हैं।

* जननी जन्मभूमि स्वर्ग से महान है।

* परहित सरिस धरम नहिं भाई।
परपीड़ा सम नहिं अधमाई।।

* आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है।

* निज भाषा उन्नति है, सब उन्नति को मूल।

* अनेकता में एकता है, हिंद की विशेषता।

* फूल सुगंध दे झरे बरस गए बादल जलभरे,
वही मनुष्य मनुष्य है जो मनुष्य के लिए मरे।

* गया वक्त लौटकर कभी नहीं आता।

* लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

(2) **मुख्य समाचारों का लिप्यंतरण -**

* टीम इंडिया खेलेगी चैंपियंस ट्रोफी में

लिप्यंतरण - Team India Khelegi Chaimpiyans trofee men.

* राजस्थान की वाइल्ड लाइफ सेंचुरीज पर वन्यजीवों से छेड़छाड़ की निगरानी होगी।

लिप्यंतरण - Rajasthan kee wild life centuries par vanyajeevon se chedachad kee nigrani hogi.

इस तरह लिप्यंतरण कीजिए ।

(3) * **मातृभाषा के पाँच वाक्यों का हिंदी में अनुवाद -**

(i) God helps those who help themselves.

अनुवाद : भगवान उन्हीं की मदद करते हैं जो स्वयं की मदद करते हैं।

(ii) Time & tide wait for none.

अनुवाद : समय और लहरें किसी की प्रतीक्षा नहीं करते।

(iii) "There is no word 'impossible' in my dictionary" said Napoleon.

अनुवाद : नेपोलियन ने कहा था, '' 'असंभव' यह शब्द मेरे शब्दकोष में नहीं है।''

(iv) Every day may not be good but there is something good in every day.

अनुवाद : हर दिन शायद अच्छा न हो परंतु हर दिन में कुछ न कुछ अच्छा होता ही है।

(v) A man is known by the company he keeps.

अनुवाद : मनुष्य की पहचान उसके साथ रहने वाले लोगों से होती है।

(4) विद्यार्थी स्वयं करें।

दूसरी इकाई

1. अस्पताल

प्र.1. (1)

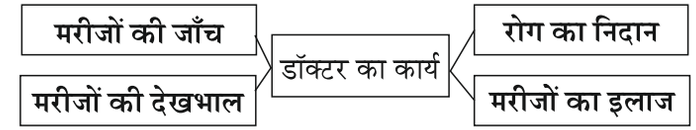

(2) (1)

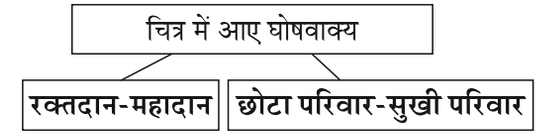

(2)

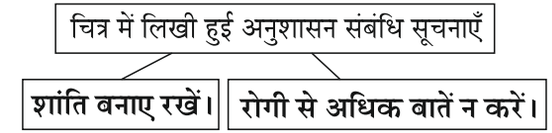

(3) (1) रुधिर, लहू, खून (2) आँख, नयन, चक्षु

(4) अस्पताल वह जगह होती है जहाँ शांत वातावरण में मरीजों की सही देखभाल की जाती है। अस्पताल में कुशल डॉक्टर और परिचारिकाएँ (नर्स) होती हैं। जिस तरीके से अस्पताल में किसी मरीज की देखभाल हो सकती है वैसी घर पर नहीं हो पाती। जाँच के लिए अलग-अलग मशीनें होती हैं। इन आधुनिक मशीनों के सहारे बिना पीड़ा के मरीज का इलाज संभव होता है। पीड़ा से व्याकुल मरीज अस्पताल आकर बहुत जल्द स्वस्थ होकर हँसते-हँसते घर लौटता है।

स्वाध्याय

★ पाठ्यपुस्तक के पृष्ठ 27 पर अस्पताल का चित्र दिया गया है। चित्र में आई.सी.यू. (अतिदक्षता विभाग), वार्ड (कक्ष) और पूछताछ खिड़की दिखाई दे रही है। चित्र में अनेक सूचनाएँ नजर आ रही हैं। जिसमें 'रोगी से अधिक बात न करें।', 'शांति बनाए रखें।' जैसी सूचनाएँ शामिल है। 'नेत्रदान, रक्तदान-महादान', 'छोटा परिवार-सुखी परिवार' जैसे घोषवाक्य भी लिखे हुए है। अस्पताल में 'रोगी से मिलने का समय सुबह 8 से 10 और शाम 4 से 7 बजे तक' यह फलक भी नजर आ रहा हैं। सब कर्मचारी अपना कार्य करते नजर आ रहे हैं। चित्र में कूड़ा दान रखा दिखाई दे रहा है। डॉक्टर, परिचारिका और वॉर्डबॉय भी नजर आ रहे हैं। व्हीलचेअर पर बैठी एक मरीज को सलाइन की बोतल लगाई है। उसके साथ एक परिचारिका भी नजर आ रही है। पूछताछ खिड़की के सामने की कुर्सियों पर मरीज (दो आदमी और एक औरत) बैठे दिखाई दे रहे हैं।

---

2. बेटी युग

प्र.1. (1)

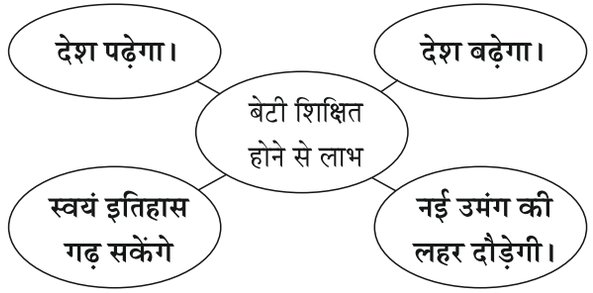

(2) (i) (1) **इरादे -** अपना इतिहास खुद किससे गढेंगे? अथवा किसे फौलादी कहा है?

(2) हमें कौनसी नई कहानी लिखनी है?

(ii) (1) दौर (2) नेक

(3) आज भी नानी द्वारा कही जाने वाली कथा-कहानियाँ सभी को पसंद आती हैं। अब हमें बेटी युग की नई कहानी मिलकर लिखनी है। आज के समय में बेटा और बेटी दोनों एक समान हैं, उन्हें पढ़ने लिखने का और आगे बढ़ने का समान अवसर भी मिलना चाहिए ताकि वे अपने फौलादी नेक इरादों से अपना नया इतिहास गढ़ सकें। पूरा देश पढ़ेगा और आगे बढ़ेगा और नई जवानी की तरंग भी दौड़ पड़ेगी।

प्र.2. (1)

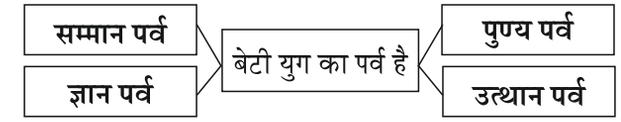

(2) (i) (1) चिड़िया (2) सयानी

(ii) (1) उत्थान (2) हवा

(3) बेटी-युग एक ऐसा पर्व है जिसमें बेटियों को सम्मान मिलेगा। इस पर्व में बेटियों को शिक्षित करके सब पुण्य कमाएँगे। सभी शिक्षित होंगे तो एक-दूसरे का सम्मान करेंगे। इस तरह यह एक प्रगति का दौर होगा, जन-जन की प्रगति का दौर होगा और तब कभी सोने की चिड़िया कहलाने वाला यह देश समझदार कहलाएगा, बेटी युग की हवा में ऊँची उड़ान भरेगा।

प्र.3. (1) आनंद विश्वास

(2) बेटा शिक्षित आधी शिक्षा, दोनों शिक्षित पूरी शिक्षा।
हमने सोचा, मनन करो तुम, सोचो-समझो, करो समीक्षा।

(3) सिर्फ बेटा शिक्षित होगा तो शिक्षा पूरी नहीं होगी लेकिन बेटा-बेटी दोनों शिक्षित होंगे तो ही शिक्षा पूरी होगी। इस विचार पर कवि ने मनन करने के लिए, सोचने के लिए कहा है। क्योंकि बेटी शिक्षित होगी तो पूरा परिवार शिक्षित होता है। बेटा-बेटी दोनों शिक्षित होंगे तो समाज का, पूरे देश का विकास होगा। इन पंक्तियों द्वारा बेटियों की शिक्षा के महत्त्व को कवि ने प्रतिपादित किया है।

(4) लड़कों के साथ लड़कियों की शिक्षा भी महत्त्वपूर्ण है। बेटा-बेटी दोनों एक समान हैं, दोनों को पढ़ने-लिखने का और आगे बढ़ने का अवसर मिलना चाहिए। पूरा देश पढ़ेगा तो समाज प्रगति की ऊँचाई पर चला जाएगा। बेटियाँ पढ़ेगी तो आत्मनिर्भर हो जाएगी। दुनिया में कोई अनपढ़ नहीं रहना चाहिए। सबको ज्ञान मिलना जरूरी है। यह संदेश इस कविता से मिलता है।

स्वाध्याय

प्र.1. (अ) (1) बेटी युग में **बेटा-बेटी, सभी पढ़ेंगे, सभी बढ़ेंगे। फौलादी ले नेक इरादे, खुद अपना इतिहास** गढ़ेंगे।

(2) बेटी युग **सम्मान पर्व है, पुण्य पर्व है, ज्ञान पर्व है। सब सबका सम्मान करें तो, जन-जन का** उत्थान पर्व है।

(आ) (1) सुहानी (2) शिक्षामय (3) चिड़िया।

(इ) (1) सत्य (2) असत्य (3) असत्य

प्र.2. (1) **बेटी पर्व :** बेटी युग एक ऐसा युग है जिसमें बेटियों को सम्मान मिलेगा। इस पर्व में बेटियों को शिक्षित करके सब पुण्य कमाएँगे। सभी शिक्षित होंगे तो एक-दूसरे का सम्मान भी करेंगे। इस तरह यह जन-जन की प्रगति का दौर होगा, हम सभी का, देश का उत्थान होगा। सोने की चिड़िया कहलाने वाला यह देश समझदार कहलाएगा और बेटी युग की हवा में ऊँची उड़ान भरेगा।

(2) **शिक्षामय विश्व :** बच्चों ने सारा जग शिक्षामय करने का निश्चय किया है। बेटा हो या बेटी अब कोई भी अनपढ़ नहीं रहेगा। सबके हाथों में पुस्तक होगी। ज्ञानगंगा की पावन धारा हर घर के आँगन तक पहुँचेगी। पुस्तक और कलम की शक्ति हर किसी को मिलेगी। ज्ञान का पर्व होगा और जन-जन का उत्थान होगा।

स्वयं अध्ययन

● वर्तमान दौर में यह बात सर्वमान्य है कि स्त्री को भी उतना ही शिक्षा का अवसर उपलब्ध होना चाहिए जितना कि एक पुरुष को है। यह बात सिद्ध सत्य है कि माता शिक्षित न होगी तो देश की संतानों का कदापि कल्याण संभव नहीं। इसलिए मराठी में एक कहावत है, 'जिच्या हाती पाळण्याची दोरी, ती सर्व जगा उद्धारी।'

स्त्री शिक्षा का स्वयं पर प्रभाव स्त्री को स्वयं भी शिक्षा के प्रति रुचि रखनी चाहिए। शिक्षित होकर वह आत्मनिर्भर बनेगी। वह पुरुषों के साथ समानता का अधिकार प्राप्त कर सकेगी। वह एक सफल गृहिणी और कुशल माता बनेगी।

एक शिक्षित माता का परिवार भी शिक्षित होगा। बच्चों का मानसिक विकास सही मायने में ऐसे परिवार में ही हो सकेगा। निराशा एवं शोषण के

अंधकार से बाहर निकालने के लिए नारी शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण कड़ी होगी। शिक्षित माता के बालक समाज में अपना कर्तव्य निभाने में सक्षम रहेंगे और समाज को प्रगति की ऊँचाइयों पर ले जाएँगे। समाज में नारी की प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

देश की हर नारी जब शिक्षा के पंख लगाकर आसमान छूने चलेगी तब देश को आगे बढ़ने में कोई नही रोक सकेगा। क्योंकि वह लक्ष्मी, सरस्वती ही नहीं बल्कि समय आने पर दुर्गा बनकर रक्षा करने के लिए भी आगे बढ़ेगी। एक जागरूक और सचेत नागरिक बनकर वह स्वयं का विकास करेगी, परिवार का विकास करेगी और देश का भी विकास करेगी।

'सजग, सचेत, सबल समर्थ
आधुनिक युग की नारी है।
ऊँचे-ऊँचे पद पर बैठी
सम्मान की अधिकारी है।"

विचार मंथन

● जन्म के बाद बेटियों को कई तरह के भेदभाव से गुजरना पड़ता है जैसे- शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, खान-पान, अधिकार आदि। लड़कियों के लिए जो पूर्वापार, नकारात्मक पूर्वाग्रह हैं उनको उस सकारात्मकता में बदलने के लिए महिला सशक्तिकरण आवश्यक है। परिवार और समाज की प्रगति में नारी शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है।

चिकित्सा शास्त्र के विकास ने गर्भ परीक्षा में लिंग पहचान कर कन्या भ्रूण हत्या के मार्ग खुले कर दिए थे। दहेज की कुप्रथा ने कई लड़कियों को जन्म लेने से पहले ही यमलोक पहुँचा दिया। कन्या भ्रूण हत्या का अंत करने के लिए और बेटियों को शिक्षित कर आत्मसम्मान के साथ जीने का अवसर देने हेतु 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' योजना की घोषणा प्रधान मंत्री मोदी जी ने की।

सदैव ध्यान में रखो।

★ जिस समाज में हम रहते हैं उस समाज का परिवर्तन हमारी वजह से ही संभव है। मुझे याद है उस दिन मैं रेल से यात्रा कर रही थी। मेरी बगलवाली सीट पर एक कॉलेज में पढ़ने वाली लड़की बैठी थी। मैंने चॉकलेट खाई और उसका रैपर खिड़की से बाहर फेंकने जा रही थी तभी उस दीदी ने मेरे हाथ से चॉकलेट रैपर

तत्परता से छीन लिया और ऐसा फेंककर कचरा न फैलाने की बात समझाई। रैपर उसने अपने बैग के साईड पॉकेट में रख लिया। मुझे यह जिंदगी भर का सबक मिल गया। अब कुछ भी कचरा फेंकने से पहले मुझे दीदी की वह बात याद आती है और मैं अपना कचरा कूडेदान में ही फेंकने के लिए प्रतिबद्ध हो जाती हूँ। दीदी जैसा करके मैं अन्य बच्चों को सुधार सकती हूँ और धीरे-धीरे पूरा समाज बदल जाएगा। 'स्वच्छ भारत' मुहिम सफल हो जाएगी।

व्याकरण

भाषा की ओर

★ गाँव - **गाँव**, **इधर** - उधर, घूमना - **फिरना**, धन - **दौलत**, **जान** - पहचान, कूड़ा - **कचरा**, **फल** - फूल, घर - **घर**।

(2) घूमना - फिरना

सेहत के लिए **घूमना-फिरना** अच्छा होता है।

(3) घर - घर

दीपावली में **घर-घर** मिठाइयाँ बनती है।

(4) गाँव - गाँव

अंतरजाल की सुविधा **गाँव-गाँव** में उपलब्ध है।

(5) फल - फूल

बाजार से बहुत सारे **फल-फूल** खरीदकर लाए।

(6) कूड़ा - कचरा

बच्चों ने मैदान पर फैला **कूड़ा-कचरा** इकट्ठा किया।

(7) जान - पहचान

समारोह में सभी **जान-पहचान** वालों को आमंत्रित किया।

(8) इधर - उधर

बगीचे में आते ही सभी बच्चे **इधर-उधर** दौड़ने लगे।

लेखन कौशल (Writing Skill)

(1) सर्वप्रथम तो मन में विचार आएगा इस बटवे को छूना भी नहीं चाहिए। क्या पता वह बटवा किसी मुसीबत का दरवाजा खोल दें। मन में कई भले-बूरे खयाल आएँगे। बटवा किसका होगा ? गलती से गिर गया होगा। उस बटवे के मालिक के पास उसका बटवा पहुँचाना चाहिए। अगर बटवे से कोई सुराग मिल जाए तो बटवा उसके मालिक तक पहुँचाना आसान होगा। पर इसके लिए बटवे को छूना पड़ेगा और खोलकर देखना पड़ेगा।

क्या पता किसी जेब कतरे ने बटवा चुराया हो और अंदर का माल निकालकर यहाँ डाल दिया हो। संभावना तो यह भी बनती है कि जेब कतरे के पीछे पुलिस लगी होगी और पकड़े जाने के भय से उसने बटवा यहाँ डाल दिया हो। मेरे हाथ में बटवा देखकर पुलिस मुझे जेबकतरा न समझ बैठे!

बटवे में बहुत सारे रुपए देखकर यह भी विचार आ जाता कि इन पैसों का सदुपयोग कैसे हो सकता है। पाठशाला के पुस्तकालय की किताबें खरीदी जा सकती हैं, गरीब बच्चों का परीक्षा शुल्क भरा जा सकता है, अनाथालय, वृद्धाश्रम के लिए कुछ दिया जा सकता है और उनकी मदद हो सकती है। लेकिन उन रुपयों को स्वयं पर खर्च करने का विचार एक बार भी नहीं आया।

सुनो तो जरा

★ हमारे सभी उत्सव और व्रत ब्रह्मांड की खगोलीय घटना, धरती के वातावरण परिवर्तन, मनुष्य के मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक कर्तव्य को ध्यान में रखकर निर्मित किए गए हैं। **जैसे-**

(1) **मकर संक्रांति -** सूर्य के उत्तरायण पर जब वह मकर राशि में गमन करता है तो मनाया जाता है। हमारी धरती के सूर्य के प्रति धन्यवाद देने हेतु मनाया जानेवाला यह त्योहार है।

(2) **दीपावली -** बरसात के बाद घर सहित आसपास की दशा बिगड़ जाती है। दीपावली के बहाने घर का कोना-कोना साफ हो जाता है। बरसात के बाद पैदा हुए कीड़े-मकोड़े दिवाली के दीपों में जलकर मर जाते हैं जिससे वातावरण में हानिकारक किटाणुओं की समाप्ति होती है।

(3) **होली -** होलिका दहन के पीछे भी यही वैज्ञानिक कारण है। होलिका दहन प्रक्रिया से वातावरण का तापमान 145 डिग्री फॅरनाइट तक बढ़ जाता है जो हानिकारक कीटकों को मारता है।

(4) **नवरात्रि -** भारतीय ऋषी मुनियों ने दिन से भी रात्रि में पूजा-अर्चना को अधिक महत्त्व दिया है। क्योंकि दिन में आवाज लगाई जाए तो दूर तक नहीं पहुँचती किंतु रात्रि में बहुत दूर तक पहुँच जाती है। इसके पीछे दिन के कोलाहल के अलावा एक वैज्ञानिक तथ्य यह भी है कि दिन में सूर्य की किरणें आवाज की तरंगों और रेडियो तरंगों को आगे बढ़ने से रोक देती हैं। मंदिरों के घंटा और शंख की आवाज से दूर-दूर तक वातावरण कीटाणुओं से रहित हो जाता है यह रात्रि का वैज्ञानिक रहस्य है। इसीलिए दो बार नवरात्रि और एक महा शिवरात्रि मनाई जाती है।

उपक्रम (Activity)

अध्ययन कौशल

★ विद्यार्थी स्वयं कृती करें।

3. दो लघुकथाएँ

प्र.1. (1)

	संज्ञा	विशेषण
(1)	मन	प्रसन्न
(2)	किस्से	प्रसिद्ध
(3)	अकबर	महान शासक
(4)	स्थान	हराभरा

(2) (i) (1) घोड़ा। (2) बीरबल।

(ii) (1) अकबर ने बीरबल को हरे रंग के घोड़े का प्रबंध करने का आदेश दिया।

(2) बीरबल ने अकबर के आदेश को सिर-आँखों पर रख लिया।

(3) (i) (1) सप्ताह। (2) शासक।

(ii) **हाथ -** हाथ धोकर पीछे पड़ जाना।, हाथ धोना।

पैर - पैर की धूल होना।, पैर पकड़ना।

(4) पिछली छुट्टीयों में मेरे परिवार के सभी सदस्य लोनावला-खंडाला गए थे। खंडाला बेहद छोटा-सा हिल स्टेशन हैं पर इसे प्रकृति की सुंदरता का वरदान मिला है। हर तरफ छाई हरियाली और पहाड़ हमें अपनी ओर आकर्षित करते हैं। भूशी झील अपने आप में अनोखी है। यहाँ बिताया हर पल मन को सुकून देता है। यहाँ का शांत सुंदर माहोल मन को प्रसन्न कर देता है। बरसात के दिनों में यहाँ कई छोटे-मोटे झरने पहाड़ों से बहते हैं जिसकी फुहार मनमस्तिष्क को तरोताजा कर देती है। यहाँ के खुबसूरत पहाड़ हमारी थकान पलभर में गायब कर देते हैं और मन को शांति मिलती है।

पास में ही लोनावाला है। मान्सून में लोनावला और खंडाला दोनों की खूबसूरती उफान पर होती है। पहाड़ों से गिरते झरने, हरियाली, झीलों से घिरे इन स्थलों को बार-बार देखने को मन करता है। यहाँ का सूर्योदय, यहाँ का सूर्योस्त, यहाँ की चाँदनी रातें मन को सुख-चैन देते हैं। शायद यही वजह होगी कि मुंबई-पूना के सैलानी सप्ताहांत प्रकृति की गोद में बिताने के लिए यहाँ आना पसंद करते हैं।

प्र.2. (1)

चित्रकार की पत्नी ने चित्रकार के दरबार में फरियाद करने की सलाह दी। क्योंकि वह सोचती थी कि,

↓

बादशाह अकबर बहुत दयालु हैं।

↓

वे भले ही पढ़े-लिखे नहीं है परंतु बड़े बुद्धिमान हैं।

↓

उनकी सहायता के लिए दरबार में नौ-नौ रत्न हैं।

↓

अपने पति को न्याय जरूर मिलेगा।

(2) (i) (1) क्योंकि चित्रकार को लगा कि सेठ बड़ा आदमी है इसलिए लोग उसी की बात को सच मानेंगे और उसे न्याय नहीं मिलेगा।

(2) क्योंकि बादशाह ने जब सेठ और चित्रकार दोनों की बातें सुनी तो न्याय करना उन्हें मुश्किल लगा।

(ii) (1) बुद्धिमान (2) सेठ

(3) (i) दूसरे **दिन** उस **दीन** के भाग खुल गए।

(ii) मैंने सोचा **कि** मैं लोगों **की** मदद करने अवश्य जाऊँगा।

(4) यदि हम निर्दोष है। हमपर अन्याय हो रहा है तो उसके खिलाफ आवाज उठाना जरूरी है। हम निर्दोष होकर चुप बैठे तो सामनेवालों को गलतफहमी होती है। चुपचाप अन्याय सह लेनेवाला भी गुनहगार होता है। कोई गलत कर रहा है, किसीपर जुलुम हो रहा है तो उसकी गलती का अहसास कराना चाहिए और हम सही मार्ग से अन्याय का प्रतिकार करेंगे तो लोग भी हमारा साथ दे सकते है।

स्वाध्याय

प्र.1. (अ) (1) बीरबल की बुद्धिमानी की (2) बीरबल की दूसरी शर्त

(3) बादशाह अकबर के दरबार में (4) चेहरा बदलने में

(5) नौ-नौ रत्न

(आ) (1) जब बादशाह ने बीरबल की दूसरी शर्त सुनी तो वे बीरबल **का मुँह देखने लगे।**

(2) क्रोधित होकर उस चित्रकार ने सेठ से **सभी चित्रों के पैसे माँगे।**

(इ) (1) बीरबल की चतुराई पर बादशाह खुश हुए। ✓

(2) बीरबल की शर्तें बादशाह ने पूरी कर दीं। ✗

(3) सेठ बहुत ही कंजूस था। ✓

प्र.2. (1) एक कंजूस सेठ ने चित्रकार से अपना चित्र बनवाया। जब चित्रकार ने पैसे माँगे तो सेठ ने उसे कहा कि चित्र ठीक नहीं है, उसे दोबारा बनाकर लाए। चित्रकार ने कई बार सेठ के चित्र बनाए लेकिन कंजूस सेठ हर बार कह देता कि चित्र ठीक नहीं है क्रोधित होकर चित्रकार ने सभी चित्रों के पैसों का तगादा किया तब सेठ ने पैसे देने से साफ मना कर दिया। अपना मेहनताना न मिलने के कारण चित्रकार परेशान हो उठा।

(2) बादशाह अकबर ने बीरबल की बुद्धिमानी की परीक्षा लेने के लिए बीरबल को हरे घोड़े का प्रबंध करने का आदेश दिया था। दोनों अच्छी तरह जानते थे कि संसार में हरा घोड़ा नहीं होता। परंतु बीरबल ने बादशाह से हरे घोड़े के मिल जाने की बात कही और दो शर्तें रखीं। पहली शर्त यह थी कि घोड़ा लेने बादशाह को स्वयं ही जाना होगा और दूसरी शर्त रखी कि घोड़े का रंग दूसरे घोड़े से अलग है, तो घोड़े को देखने का दिन भी अलग यानि सप्ताह के सात दिनों के अलावा होना चाहिए। 'हरे घोड़े' के प्रबंध की बात इस तरह बीरबल ने बड़ी चतुराई से टाल दी।

(3) घोड़े के मालिक की पहली शर्त यह है कि बादशाह को घोड़ा लेने वहाँ स्वयं ही जाना पडेगा और दूसरी शर्त यह है कि जब घोड़े का रंग दूसरे घोड़ों से अलग है तो घोड़े को देखने का दिन भी अलग होना चाहिए। यानि सप्ताह के सात दिन के अलावा किसी भी दिन बादशाह घोड़ा देख सकते है।

व्याकरण

प्र.1. (अ) **सिर आँखों पर रखना - अर्थ :** स्वीकार करना।

वाक्य : गुरु के आदेश को शिष्य ने सिर आँखों पर रखा।

(आ) **मात देना - अर्थ :** पराजीत करना।

वाक्य : भारतीय टीम ने क्रिकेट में श्रीलंका की टीम को मात दी।

(इ) **मुँह लटकाना - अर्थ :** उदास होना।

वाक्य : परीक्षा में कम अंक मिले इसलिए राज मुँह लटकाकर बैठ गया।

(ई) **दूध का दूध, पानी का पानी करना - अर्थ :** सही न्याय करना।

वाक्य : कल सरपंच ने दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया।

लेखन कौशल (Writing Skill)

विचार मंथन

- 'सत्यमेव जयते' यह हमारे राष्ट्र का घोष वाक्य है। इसका अर्थ है सत्य की हमेशा जीत होती है। इस तथ्य को भली भाँति समझने वाले व्यापारी भी कभी नुकसान में नहीं जाते। प्राय: माना जाता है कि सच्चाई से कोई व्यापार लाभदायी नहीं होता। झूठ और बेईमानी व्यापार के पर्यायवाची शब्द मानने वालों को यह कहानी जरूर पढ़नी चाहिए और सबक सीखना चाहिए।

  स्व. जमनालाल बजाज उन दिनों रुई का व्यापार करते थे। उनके साथ दूसरे व्यापारी भी थे। दूसरे व्यापारियों ने अधिक कमाई के लालच में रुई में पानी छिड़ककर गाँठें बाँधना शुरू किया। इससे उन्हें दो लाभ दिख रहे थे - एक तो कुछ वजन बढ़ जाता था और रुई लंबे तार वाली दिखाई देने से ऊँचे दाम भी मिल जाते। परंतु थोड़े समय पश्चात पानी सूख जाने पर रुई खराब हो जाती थी। जब विदेशी व्यापारियों को इस चालाकी का ज्ञान हुआ तो वे कम कीमत में माल

खरीदने लगे। पानी न मारने वाले व्यापारी प्रतिस्पर्धा में टिक न सके। श्री जमनालाल जी के मुनीम को भी चिंता हुई और उन्होंने जमनालाल जी को रुई में पानी मारने की सलाह दी। लेकिन जमनालाल जी ने साफ मना कर दिया। फिर समझौता करते हुए उन्होंने कहा पानी मारकर जो गाँठें बेची जाएँगी उन पर W.I.C. मार्क लगाया जाए और बिना पानी वाली गाँठों पर B.J. लिखा जाए। इसके साथ ही उन्होंने अपने मुनीम को परचे बाँटने का आदेश दिया कि W.I.C. का अर्थ पानी मारी हुई गाँठें और B.J. वाली गाँठें बिना पानी की हैं। यह बात विदेशी व्यापारियों से भी छिपी नहीं। वे B.J. मार्क वाली गाँठें ऊँचे दाम देकर खरीदने लगे। इस तरह सच्चाई के कारण उनके माल की माँग भी बढ़ी और उनकी आमदनी भी बढ़ी।

इस घटना से पता चलता है कि सत्य का फल हमेशा मधुर होता है।

अध्ययन कौशल

★ **प्रस्तावना** - श्रोताओं को संबोधित करते हुए विषय निवेदन करना चाहिए जैसे कि, सम्माननीय अध्यक्ष, प्रमुख अतिथि गण, शिक्षक वृंद और मेरे प्रिय साथियों आज आपके सामने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर अपने विचार प्रकट करना चाहता हूँ।

विषय प्रवेश - आजादी का महत्त्व, अंग्रेजों से मुक्ति मिली, परंतु देश की अन्य समस्याएँ ..... भ्रष्टाचार, गरीबी, भेदभाव आदि से निजात पाने के उपाय।

उद्धरण, सुवचन – 'तन समर्पित मन समर्पित
रक्त का कण कण समर्पित
चाहता हूँ राष्ट्र की धरती
तुझे कुछ और भी दूँ।'
'जन्मभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है।'

स्वमत : भारत के उज्ज्वल भविष्य के लिए हम सबको वचनबद्ध होना है। वतन को नई ऊँचाई पर पहुँचाने के लिए मिलकर प्रयास करने की जरूरत है।
विद्यार्थी आगे लिखने की कोशिश करें।

भाषण विद्यार्थी स्वयं तैयार करें।

उपक्रम (Activity)

★

राज्य का नाम	शैली का नाम
राजस्थान	राजपूत शैली जिसमें मेवाड़ी, मारवाड़ी, जयपुरी, बीकानेरी, तथा बूंदी शैली में बने चित्र हैं।
बिहार	मधुबनी
महाराष्ट्र	वारली
जम्मू-कश्मीर	पहाड़ी चित्रकला शैली जिस में गुलेरी, गड़वाल, जम्मू तथा कांगड़ा शैली हैं।
प. बंगाल	कंपनी शैली
पंजाब, बंगाल, उड़ीसा	जैन शैली
बंगाल, बिहार	पाल शैली, गौड़ शैली
दक्षिण भारत	द्रविड़ शैली
अजंता की गुफाएँ (महाराष्ट्र)	बौद्ध शैली
उड़ीसा	पट चित्रकारी
आंध्र प्रदेश	कलमकारी

4. शब्द संपदा

प्र.1. (1)

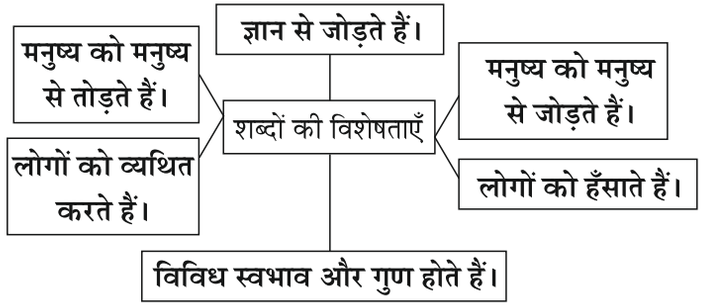

(2) (i) (1) मनुष्य शब्दों को अर्थ देता है और जीवंत बनाता है। ✓

(2) मनुष्य स्वभाव के जितने विभिन्न नमूने हैं उतने शब्दों के स्वभाव के नहीं। ✗

(ii) (1) शब्द ही मनुष्य को मनुष्य से जोड़ते हैं और **शब्द ही मनुष्य को मनुष्य से तोड़ते हैं।**

(2) कुछ लोग औरों को हँसाने का काम करते हैं, वैसे **कुछ शब्द लोगों को हँसाते हैं।**

(3) (i) (1) तोड़ना (2) रुलाना

(ii) (1) विज्ञान (2) विभिन्न

(4) अपने विचार और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए हमें शब्दों की आवश्यकता होती है। शब्द हमारे चरित्र, बुद्धिमत्ता, समझ और संस्कारों को दर्शाते है; इसलिए उनके उच्चारण से पूर्व हमें सोचना चाहिए क्योंकि शब्दों में बहुत ताकत होती है। शब्द ही मनुष्य को मनुष्य से जोड़ते हैं और शब्द ही मनुष्य को मनुष्य से तोड़ते हैं। कुछ शब्दों के कारण सामनेवाला व्यक्ति व्यथित होता है तो कुछ शब्दों से लोग हँसते है; खुश होते हैं इसलिए किस समय, किस प्रकार के शब्दों का प्रयोग करना चाहिए यह ध्यान में रखना बहुत जरूरी होता है। अनुचित शब्दों का प्रयोग हमेशा हानिकारक होता है। कई बार गलत जगह पर गलत शब्दों का चयन करने से मनोरंजक स्थिती भी बन जाती है तो कभी रिश्तों में दरार पड़ सकती है। इसलिए शब्दों की शक्ति को ध्यान में रखते हुए हमें शब्द प्रयोग के लिए सावधानियाँ बरतनी होगी।

प्र.2. (1)

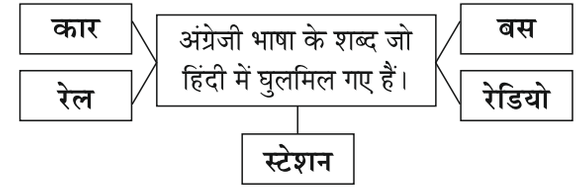

(2) (i)

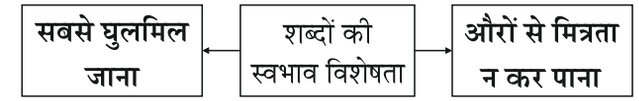

(ii)

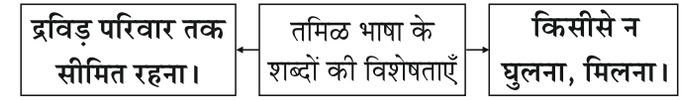

(3) (i) (1) परतंत्र (2) शत्रु

(ii) (1) अस्तित्व (2) स्वभाव

(4) खिचड़ी भाषा का अर्थ बहुत सारी भाषाओं का मिश्रण। जरूरत न होने पर अन्य भाषाओं के शब्दों का प्रयोग करना अनुचित है। बहुत बार हम बातें करते समय किसी और भाषा के शब्द इस्तेमाल करते है। अधिक मात्रा में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हम करते हैं क्योंकि शुरू से ही हम सभी को व्यवहार में उन शब्दों का प्रयोग करना सुलभ होता है जैसे प्लॅटफॉर्म, टेबल आदि। कभी कभी मिश्र भाषा बोलने के कारण अर्थ का अनर्थ होता है। सुननेवाले को बात करने वाले व्यक्ति की बात समझना मुश्किल होता है। जब हम कोई भी भाषा बोलते है तो वह शुद्ध होनी चाहिए। भाषा की मिठास और पवित्रता रखने के लिए यह ध्यान रखना जरूरी है। हर एक भाषा महत्त्वपूर्ण है और उनकी अलग खासियत है। हम खुद शुद्ध भाषा बोलने का प्रयास करेंगे तो आनेवाली पीढियों पर भाषा के अच्छे संस्कार हो कर उनकी भाषा विकसित हो सकती है। विविध भाषाओं का ज्ञान हमें होना चाहिए लेकिन उनका प्रयोग उचित जगह पर करना ही भाषा का सम्मान है।

स्वाध्याय

प्र.1. (अ) (1) ज्ञानशाखाओं। (2) उच्चारण। (3) निष्क्रिय।

(आ) (1) क्योंकि मनुष्य ने अपनी बुद्धि के बल पर भाषा की खोज की ।

(2) क्योंकि मनुष्य शब्दों को अर्थ देकर जीवंत बनाता है और उनके जीवंत हो जाने पर उनमें मनुष्य के विविध स्वभाव, गुण आने लगते हैं।

(3) क्योंकि वे शब्द बहुत प्रिय होते हैं।

प्र.2. (1) **भाषा का अर्थ है -** सार्थक शब्दों का व्यवस्थित क्रमबद्ध संयोजन। मनुष्य एक विचारशील प्राणी है। उसने अपने मस्तिष्क से भाषा की खोज की। यह भाषा ही सभी प्रगति की जड़ है। दुनिया की सभी ज्ञानशाखाओं का विकास भाषा के कारण ही संभव हुआ।

(2) शब्दों के बाहर जाने और अन्य अनेक भाषाओं के शब्दों के आने से हमारी भाषा समृद्ध होती है। कुछ शब्दों का स्वभाव ही ऐसा होता है कि वे अन्य भाषा के शब्दों में घुलमिल जाते हैं। कुछ शब्द ऐसे भी होते हैं जो भिन्न भाषाओं के मेल से बनते हैं, **जैसे -** वर्षगाँठ - संस्कृत और हिंदी भाषा के शब्दों का मेल है, तो रेलयात्री अंग्रेजी-हिंदी भाषा के शब्दों का मेल है और कुछ शब्द उनके मूल रूप में ही आ जाते हैं। विशेषत: वे शब्द जिनके लिए हमारे पास प्रतिशब्द नहीं होते **जैसे** - पेंसिल, रेडियो आदि। इस तरह शब्दों के आने से भाषा समृद्ध बनती है।

(3) शब्दों के बारे में लेखक ने बताया है कि शब्दों का संसार बड़ा विचित्र है। शब्द मनुष्य को ज्ञान से जोड़ते हैं। शब्द मनुष्य को मनुष्य से जोड़ते हैं और शब्द ही मनुष्य को मनुष्य से तोड़ते हैं। विज्ञान की नजर में वे सिर्फ ध्वनि चिह्न हैं पर मनुष्य उन्हें अर्थ देकर, जीवंत बनाता है और उनमें विविध स्वभाव गुण आने लगते हैं। वे मनुष्य को हँसाते भी हैं और दुखी भी करते हैं। कुछ शब्द ऐसे भी होते हैं जिन्हें बार-बार सुनने की इच्छा होती है। ऐसी अनोखी है यह शब्दों की दुनिया।

(4) शब्द भंडार जितना अधिक उतनी भाषा समृद्ध मानी जाती है। कुछ भाषाओं के शब्द किसी दूसरी भाषा से मित्रता कर लेते हैं और उन्हीं में से एक बना जाते हैं। हिंदी के कुछ शब्द मिलनसार हैं और अन्य भाषाओं के मेल से बने हैं। कुछ हिंदी-संस्कृत से तो कुछ हिंदी और अरबी / फारसी से तो कुछ अंग्रेजी और संस्कृत के मेल से बने हैं। शब्दों के इस प्रकार बाहर जाने और अन्य अनेक भाषाओं के शब्दों के आने से हमारी भाषा समृद्ध होती है। ऐसे शब्द जिन्हें हमारी भाषा में प्रतिशब्द न हो उन शब्दों को भाषा में सहर्ष स्वीकार करने से भाषा समृद्ध ही होगी।

(5) कमसे कम शब्दों में बोलना और लिखना एक कला है। यह कला विविध पुस्तकों के वाचन से और परिश्रम से साध्य हो सकती है। किस समय, किसके सामने, किस प्रकार के शब्दों का प्रयोग करना चाहिए इसे अनुभव, मार्गदर्शन के अलावा वाचन द्वारा भी सीखा जा सकता है। शब्दसंपदा बढ़ाने के लिए साहित्य के वाचन की जरूरत होती है। अत: अपनी वाचन

संपदा बढ़ाने के लिए वाचन संस्कृति को बढ़ाना आवश्यक हैं। जितनी हमारी वाचन संस्कृति बड़ी उतनी ही विशाल शब्द संपदा के हम मालिक बन जाएँगे।

सदैव ध्यान में रखो।

★ हमारी पोशाक और चालढ़ाल का प्रभाव समाज पर जरूर पड़ता है लेकिन वह स्थायी नहीं होता। मधुर शब्दों के कारण वह स्थायी बनता है। शब्द ही हैं जो हमारी शिक्षा, चरित्र, संस्कारों को दर्शाते हैं, शब्द भय का परिमार्जन करते हैं और विश्वास उत्पन्न करते हैं। परंतु बुरे वचन मनुष्य को रुष्ट कर देते हैं। कटु वचन शस्त्र से भी गहरे घाव उत्पन्न करते हैं और शस्त्र के घाव तो भर भी जाते हैं लेकिन शब्दों के घाव हमेशा रिसते रहते हैं, कभी नहीं भरते। इसलिए शब्दों का प्रयोग सावधानी से करना चाहिए। यह तो हुई बोलते समय शब्दों के प्रयोग की बात।

लिखते समय तो और भी ध्यान रखना चाहिए क्योंकि मात्रा की छोटी सी गलती अर्थ का अनर्थ कर देती है। इसके कई उदाहरण हम प्रत्यक्ष देख चुके हैं, जैसे कि दिन-दीन या सुख-सूख।

जरा सोचो ..... चर्चा करो

★ पशु-पक्षी बेजुबान हैं ऐसा नहीं। वे अपनी भाषा में मतलब बोलियों में बोलते भी हैं परंतु हम उन्हें समझ नहीं पाते। अगर समझ पाते तो उनकी जुबान से रोज हमें मनुष्य के दुष्कर्मों की कहानियाँ ही सुनने मिलतीं। पाप-पुण्य की बातें करने वाले हम मनुष्य मानते हैं कि किसी को बेघर करना सबसे बड़ा पाप है और अपने स्वार्थ की खातिर हम पाप पर पाप किए जा रहे हैं।

जंगलों की अंधाधुंध कटाई करके हम उनके घर उनसे छीन रहे हैं। फिर वे गाँव शहर में आ जाते हैं तब मनुष्य उन्हें मार भगाता है। वनों में उन्हें खाने-पीने को चारा उपलब्ध होता है। उनके मुँह से हम निवाला भी छीन रहे हैं। बेचारे वन से बाहर आकर हमारे फैले प्रदूषण में जी भी नहीं पाते। न खा-पी सकते हैं न सो पाते हैं।

अब वे शिकायत करें भी तो किससे करें? बेचारे मौसम की मार झेलते हुए मौत को गले लगा लेते हैं। भूख, प्यास से जूझते हुए दम तोड़ देते हैं। मनुष्य को संवेदनाहीन, निष्ठूर, क्रूर, स्वार्थी इस तरह के ताने ही हम उनकी जुबान से सुनते अगर उनकी बोलियाँ समझ पाते। 'अज्ञान में भी सुख होता है' इसलिए अच्छा है

कि हमें उनकी बोली नहीं समझती। परंतु उनके संरक्षण के लिए सरकार के साथ-साथ जनता को भी आगे आना है ताकि पर्यावरण संतुलन बना रहे और पशु-पक्षी और मनुष्य की जीवन नैया हँसते-खेलते पार हो जाए।

स्वयं अध्ययन

(1)

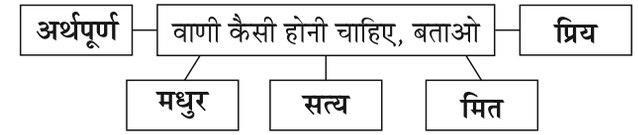

(2) भाषा की परिभाषा **सार्थक शब्दों का व्यवस्थित क्रमबद्ध संयोजन ही भाषा है।**

(3)

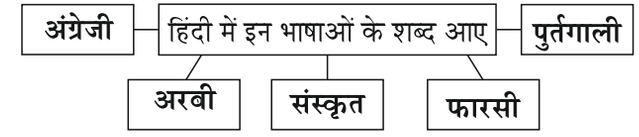

व्याकरण

(1) (1) लक्ष्मी **मिल** यहाँ से दस **मील** दूरी पर है।

(2) **प्राण** छोड़ दूँगा पर **प्रण** नहीं छोड़ूँगा।

(3) **हंस** को देखकर रुचिका **हँस** पड़ी।

(4) शब्द **कोश** में **कोष** शब्द मिलता है।

(5) **दिन** रात **दीन**-दुखियों की सेवा करना सभी का कर्तव्य है।

(6) नदी के **कूल** का **कुल** जल समेटा नहीं जा सकता।

(7) **दीया** दीवाली में जलाकर देहरी पर रख **दिया।**

(8) बालक **पिता** से पानी **पीता** है।

(2) (1) दरार पड़ना - दूरी बढ़ना।

वाक्य - रुपयों-पैसों के कारण दो भाइयों के बीच **दरार पड़ गई।**

(2) अनाप-शनाप बोलना - निरर्थक बातें करना।

वाक्य - क्रोध में शीला **अनाप-शनाप बोल रही थी।**

लेखन कौशल (Writing Skill)

★ कौआ काको धन हरै कोयल काको देत।
तुलसी मीठे वचन के जग अपनो करी लेते।

अर्थात कौआ और कोयल दोनों का रंग काला है परंतु वाणी में अंतर है। कौआ कर्कश बोलता है और दूसरों के क्रोध का पात्र बनता है जबकि कोयल मीठा बोलती है इसलिए दुनिया उसके आवाज की दिवानी बन जाती है। इन दोनों का उदाहरण देकर तुलसीदास जी ने हमें मधुर भाषण की सलाह दी है।

वास्तव में मधुर वाणी औषधि के समान होती है और कटु वाणी तीर के समान घायल करने वाली। एक मधुर शब्द दो रूठे हुए को मना लेता है तो एक कटु शब्द दो मित्रों को हमेशा के लिए दूर कर देता है। कटु वचन बोलने वाले पर कभी कोई विश्वास नहीं करता। कटु वचन बोलने वाले के सामने कोई भी अपना हृदय नहीं खोलता और मधुर बोलने वाले के सामने लोग अपना हृदय खोलकर रख देते हैं। अपने मन की बात आसानी से कह देते हैं।

बाणभट्ट जब मृत्युशय्या पर थे तब उनकी अधुरी पुस्तक पूरी करने की जिम्मेदारी अपने बेटे पर सौंपना चाहते थे। उन्होंने अपने बेटों को खिड़की से बाहर दिखने वाले एक वृक्ष का वर्णन करने को कहा। बड़े बेटे ने कहा, "शुष्कं काष्ठ तिष्टत्यग्रे।" और छोटे बेटे ने कहा, "निरस तरुवर विलसति पुरत:।" बात एक ही थी। लेकिन छोटे बेटे की बात में माधुर्य था इसलिए उन्होंने छोटे बेटे को अपनी पुस्तक पूरी करने का भार सौंपा।

एक ही बात मधुर शब्दों में कही जा सकती है और कटु शब्दों में भी। लेकिन हर कोई मधुर वचन ही सुनना पसंद करता है। इसलिए संत कवि कबीर कहते हैं, "ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय। औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय।।"

इस प्रकार मधुर वचन हमें आत्मिक सुख भी पहुँचाते हैं।

सुनो तो जरा

(1) यह उद्देशिका संविधान के उद्देश्यों को प्रकट करने हेतु प्राय: प्रस्तुत की जाती है। भारतीय संविधान की उद्देशिका अमेरिकी संविधान से प्रभावित तथा विश्व में सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। यह संविधान का सार मानी जाती है तथा उसके लक्ष्य को प्रकट करती है।

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को:

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता

और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

(2) विद्यार्थी स्वयं कृती करें।

प्रकल्प

खोजबीन

(1) धीरे-धीरे रे मना, धीरे सबकुछ होय।
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय।।

(2) माटी कहे कुम्हार से तू क्या रौंदे मोय।
एक दिन ऐसा आएगा, मैं रौंदूँगी तोय।।

(3) गुरु गोविंद दोनो खड़े, काके लागू पाय।
बलिहारी गुरु आपनो, गोविंद दियो मिलाय।।

(4) साई इतना दीजिए, जा में कुटुंब समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाए।।

(5) बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पंची को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।।

अध्ययन कौशल

★ (1) **अंतरजाल :** गूगल पर हमारे कई प्रश्नों के उत्तर बड़ी आसानी से उपलब्ध होते हैं। परंतु गूगल का उपयोग स्मार्ट फोन, टैबलेट या लैपटॉप, कंप्यूटर हो तो ही संभव है। अत: इनमें से कोई एक और साथ में इंटरनेट होना आवश्यक है।

(2) **संदर्भ ग्रंथ :** पुस्तकालय की किताबें जानकारी का अच्छा साधन होती हैं। इन किताबों को पढ़कर अपनी टिप्पणी बना सकते हैं या विशिष्ट पन्नों की झेरॉक्स लेकर अपने पास फाईल में संकलन कर सकते हैं।

(3) **अखबार या पत्र-पत्रिकाएँ :** इनको पढ़कर हम जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और आवश्यक जानकारी के फुटनोट बनाकर रख सकते हैं या खुद की खरीदी पत्र-पत्रिकाओं के पन्ने काटकर अपने पास फाईल करके संकलित कर सकते हैं।

(4) किसी व्यक्ति का भाषण, अध्यापक द्वारा बताई बातें या दूरदर्शन पर देखीं, सुनीं बातें भी हमें जानकारी दे सकती हैं। अर्थात उनके भी नोटस् बनाकर रखने से ही वह जानकारी काम आएगी। क्योंकि समय के साथ जानकारी का विस्मरण होना प्राकृतिक है।

5. बसंत गीत

प्र.1. (1)

	पद्यांश में उल्लेखित पंछी	वसंत के आगमन का परिणाम
(1)	कोयल	गीत गाती है।
(2)	मोर	नृत्य करता है।

(2) (i) (1) बन-बागों में हर तरफ क्या छाया है?

(2) कविता में किस ऋतु की बात हो रही है?

(ii) (1) मधुप (2) मकरंद

(3) फूलों की कलियाँ खिल गई हैं जिन्हें देखकर लगता है कि फूलों का मन अपनी मुस्कान बिखेर रहा है। भौंरों की गुनगुनाहट कानों को बड़ी मधुर लग रही है। इन भौंरों ने खिले हुए फूलों का मधुर रस चुराया है।

सज-धजकर बसंत ऋतु आई है, उसकी खुशी में हम बसंत गीत गाएँ। वन-बागों में हर तरफ प्यारी सी महक छाई है। मोर नृत्य कर रहा है, कोयल मीठे गीत गा रही है।

प्र.2. (अ) (1) (i)

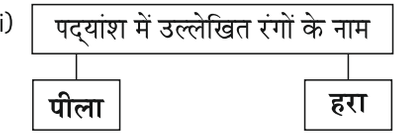

(ii)

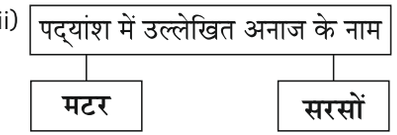

(2) (i) (1) आम पर बौर छाया है।

(2) खेतो में पीले रंग की सरसों खिली है।

(ii) (1) अमवा। (2) अरु।

(3) सज-धजकर वसंत ऋतु आई है। उसकी खुशी में बसंत गीत गाएँ। खेतों में पीले रंग की सरसों खिली है और आम पर बौर आया है। हरी-हरी धरती के बिछौने पर प्रकृति ने अनंत रंग बरसाए हैं। इस वसंत के गीत गाओ।

प्र.3. (1) चंद्रप्रकाश 'चंद्र' (2) गीत।

(3) कलि-कलि करत कलोल कुसुम मन, मंद-मंद मुस्कायो।
गुन-गुन-गुन-गुन गूँजे मधुप गन मधु मकरंद चुरायो।।

(4) कलिया खिल गई हैं। फूलों का मन अपनी मुस्कान बिखेर रहा है ऐसा लगता है। भौरों ने गुन-गुन करते मधुर गुनगुनाहट शुरू की और वे फूलों का मधुर रस चुराने लगे। गुन-गुन-गुन-गुन, मंद-मंद जैसे लयात्मक और ध्वन्यात्मक शब्दों के कारण और इन पंक्तियों द्वारा कविने बसंत ऋतु में प्रकृति में होने वाले परिवर्तन को दर्शाया है इसलिए यह पंक्तियाँ मुझे पसंद है।

(5) वसंत ऋतु वृक्ष, फूल, पशु, पक्षी, मनुष्य सभी को मुग्ध कर देता है।
बसंत ऋतु में मेरा मन खुशी से झूम उठता है। बसंती हवा मन में नई स्फूर्ति और नई उमंग संचार करती है। बसंत ऋतू में ही होली का त्योहार आता है। हम धूमधाम से यह त्योहार मनाते है। इसी ऋतु में मीठे आम खाने मिलते है। बसंत ऋतु अपने साथ सुंदरता, उमंग, सुगंध लेकर आती है जिससे मेरा मन प्रसन्न होता है।

स्वाध्याय

प्र.1.

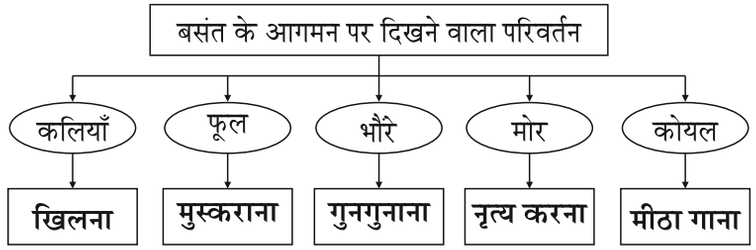

प्र.2. प्रकृति की गोद में बसे भारत देश में छह ऋतुएँ हैं और प्रत्येक ऋतु दो-दो महीने अपना जादु बिखेरते हुए देश की जलवायु में परिवर्तन लाती है। ग्रीष्म में देशवासियों को झुलसा देनेवाली गर्मी होती है तो वर्षा ऋतु की फुहार देश की धरती को हरी-भरी, मनमोहक बना देती है। शरद ऋतु आती है तो मौसम को खुशनुमा बना देती है। हेमंत ऋतु आती है तो उत्तर भारत में ठंड बढ़ने लगती है और पहाडियों पर बर्फ छा जाती है। शिशिर ऋतु में श्वेत वस्त्र पहनी पर्वत शृंखलाएँ अपनी सुंदरता बिखेरती हैं। फिर बसंत के आगमन पर धरती श्वेत वस्त्र फेंक देती है और अनेक रंग बिखेरती है। फूल और नए पत्तों के विविध रंग बहार

ले आते हैं। इस प्रकार ऋतुओं का यह चक्र मौसम में परिवर्तन लाता है, साथ ही हमारे जीवन पर भी अपना प्रभाव डालता है।

व्याकरण

प्र.1. (1) (i) फूल, पुष्प (ii) भ्रमर, भौंरा
(2) (i) ऋतु (ii) कलियाँ
(3) (i) मकरंद (ii) ऋतु
(4) (i) मुस्कायो - चुरायो (ii) उड़ायो - गायो

लेखन कौशल (Writing Skill)

वसंत ऋतु

★ पीत-पीत हुए पात
सिकुड़ी-सिकुड़ी सी रात
ठिठुरन का अंत आ गया
देखो वसंत आ गया।'

साहित्य में बसंत ऋतु ने अपनी ऐसी जगह बना ली है कि उसे 'ऋतुराज' संबोधित किया गया है। सभी बसंत के प्रशंसक रहे हैं। इसके पीछे कारण भी हैं। प्रकृति अपना मादक मोहक रूप चारों ओर बिखेरती है। खेतों में सरसों के फूलों की शोभा, तो जंगलों में पलाश के फूल अपनी शोभा बिखेरते हैं। पेड़-पौधों पर हरितिमा छाने लगती है। सुप्त कलियाँ खिल उठती हैं। फूल अपने विविध रंगों की छटाएँ बिखेरते हैं। शीतल, मंद पवन अपने साथ उनकी सुगंध लुटाता है। आम के वृक्ष पर बौर सुशोभित होता है।

विविध रंगों के इन फूलों पर भौंरे गुनगुनाते हैं। तितलियाँ इन फूलों की गोद में बैठकर उनको और भी मोहक बना देती हैं। आम के वृक्ष पर बैठकर कोयल अपनी मधुर तान सुनाती है। मोर वन-उपवन में थिरकते हैं।

इस तरह प्रकृति अपने पूरे शवाब पर जादू बिखेरती है। मनुष्य, पशु-पक्षी सभी स्वस्थ, सुखी और सक्रिय दिखाई देते हैं। वसंत प्रकृति का एक अनोखा उपहार है, जो मनुष्य को हँसाता है, खिलाता है, प्रफुल्लित करता है। इसके स्वागत में कवि कहते हैं,

'जय वसंत रसवंत सकल सुख सदन सुहावन
मुनि मन मोहन भुवन जिय प्रेम गुहावन।'

6. चंदा मामा की जय

प्र.1. (1)

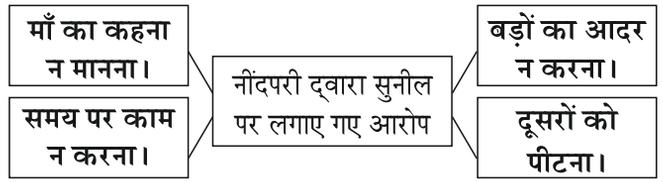

(2) (i) (1) असत्य (2) सत्य

(ii) (1) हम तुम्हें कड़ी से कड़ी सजा देंगे।

(2) सजा दी जाएगी।

(3) (i) (1) बचपन (2) बड़प्पन

(ii) (1) माफी (2) निरादर

(4) जीवन का एक-एक पल कीमती होता है। खोया हुआ धन हम फिर-से पा सकते हैं लेकिन बिता हुआ समय लौटकर नहीं आता। दुनिया में ऐसी घड़ी बनी ही नहीं जो बीते हुए समय को फिर-से दिखा दें। अत: समय के सामने घूटने टेक देने चाहिए और उसका सदुपयोग करना चाहिए। समय पर पढ़ाई-लिखाई करनेवाला छात्र सफलता प्राप्त करता है। रोगी को समय पर इलाज मिले तो वह जल्दी स्वस्थ हो जाता है। समय पर बीज बोने पर किसान को अच्छी फसल मिलती है। इन सब बातों से स्पष्ट है कि समय बड़ा महत्त्वपूर्ण है। संत कबीर के शब्दों में,

कल करे सो आज कर, आज करे सो अब। पल में परलै होएगी, बहुरी करेगा कब।।

प्र.2. (1)

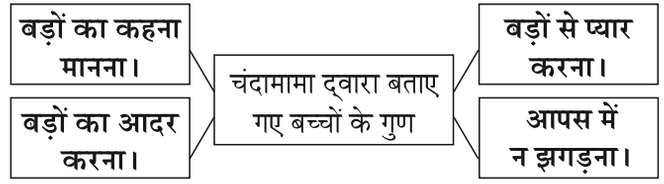

(2) (i) (1) क्योंकि बच्चों ने छोटी-बड़ी सभी बुरी आदतें छोड़ देने की प्रतिज्ञा की।

(2) क्योंकि उन्होंने बच्चों के गुण नहीं देखे और सजा देने से पहले रातरानी को बच्चों की अच्छाइयाँ भी ढूँढ़नी चाहिए, ऐसा चंदा मामा का मानना था।

(ii) (1) बच्चे प्रतिज्ञा करते हैं कि हम छोटी-बड़ी सभी बुरी आदतें छोड़ देंगे।

(2) नींदपरी ने बच्चों के गुण नहीं बताए।

(3) (i) (1) छोटी × बड़ी (2) बुराई × अच्छाई

(ii) (1) आदत (2) ताली

(4) बच्चे तो शरारती ही होते हैं लेकिन वह कभी कभी हद पार कर देते हैं। माँ-बाप के दुलार का फायदा उठाते हैं। उनकी छोटी गलतियाँ तो सब भूल जाते हैं। बच्चों को प्यार से उनकी गलतियाँ बतानी चाहिए ताकि वो दोबारा उन गलतियों को दोहराए नहीं। बच्चों की बुरी आदतें छोड़ने के लिए, उनके बुरे बर्ताव के लिए उन्हें समय पर ही डाँटना-फटकारना बहुत जरूरी होता है नहीं तो वह गलत रास्ते पर चले जाएँगे। बच्चों को बात-बात पर मारना-पीटना भी अच्छा नहीं क्योंकि वे सजा के आदी हो जाते हैं। उनपर किसी बात का असर नहीं होता। इसके दुष्परिणाम भी हो सकते हैं इस बात का ख्याल रखना चाहिए।

स्वाध्याय

प्र.1. (अ) (1) यह वाक्य रातरानी ने सुनील से कहा क्योंकि नींदपरी ने सुनील पर कई आरोप लगाए थे और रातरानी को भी ऐसा लगा कि सुनील बड़ों का मजाक उड़ाता है, उनका आदर नहीं करता।

(2) यह वाक्य रातरानी ने सभी बच्चों से कहा क्योंकि बच्चों में बुराई के साथ-साथ अच्छाई भी थी। और बच्चों ने प्रतिज्ञा भी की कि वे छोटी-बड़ी सभी बुरी आदतें छोड़ देंगे।

(आ) (1) कप-प्लेटें (2) बताशे (3) शैतानी

(4) अन्याय (5) गुणवाले

प्र.2. यह एकांकी रातरानी की अदालत का दृश्य प्रस्तुत करती है। एकांकी में नींदपरी द्‌वारा रोने वाले बच्चों पर मुकदमा चलाया गया है। सुनील, अनिल और अन्य चार बच्चों को अदालत में पेश किया गया। अनिल हमेशा रोता रहता है और सुनील बहुत शैतानियाँ करता है। आज उसने घर में चाय की कप-प्लेटें तोड़कर माँ को परेशान कर दिया था। वह अपनी माँ का कहना नहीं मानता था। कोई भी काम समय पर नहीं करता था। मतलब खाने के समय खाना नहीं खाता था, खेलने के समय खेलता नहीं था और पढ़ने के समय पढ़ता नहीं था। वह बड़ों का आदर नहीं करता था और उनको 'तू' कहकर पुकारता था और दूसरों को पीटता भी था।

उसके इतने सारे अपराध सुनकर रातरानी क्रोधित हुई और सुनील ने जब 'नींदपरी झूठ-मूठ कहती है' कहा तो रातरानी को लगा कि सुनील तो बड़ों का मजाक भी उड़ाता है। इसलिए वह उसे कड़ी-से-कड़ी सजा देना चाहती थी। परंतु सारे बच्चे गला फाड़कर रोने लगे और सुनील को सजा न देने की विनति करने लगे। बच्चों के रोने का कारण यह भी था कि रोने पर उन्हें लड्डू और बताशे मिलते थे इसलिए वे रोते थे। सुनील भी रातरानी से माफी माँगकर शैतानी न करने की बात कहता है। सभी बच्चे भी कभी न रोने की बात कहते हैं।

तभी चंदामामा आते हैं। चंदामामा ने बच्चों के अच्छे गुण रातरानी को बताए और सुनील को सजा देकर अन्याय करने से रोका। उन्होंने बताया कि सुनील उससे छोटे बच्चों को कभी नही मारता, उनसे प्यार करता है। रोनेवाले सभी बच्चे बड़ों का कहना मानते हैं, उन्हें प्यार करते हैं, उनका आदर करते हैं, और आपस में कभी नहीं झगड़ते। ऐसे गुणी बच्चों को सजा नहीं दी जाती। रातरानी ने बच्चों को बुरी आदतें छोड़ने पर सजा नहीं देने का वचन दिया। बच्चों ने भी छोटी-बड़ी सभी बुरी आदतें छोड़ने की प्रतिज्ञा की। इसलिए रातरानी ने सभी बच्चों को माफ कर दिया।

इस तरह एकांकी द्‌वारा लेखक ने बुरी आदतों का त्याग करने की सलाह दी है। साथ ही बड़ों को सम्मान देने और छोटों से प्यार करने के लिए प्रेरित किया है। लेखक ने शांति-प्रियता के लिए भी प्रोत्साहित किया है।

प्र.3. इस एकांकी का पसंदीदा पात्र सुनील है। भले ही नींदपरी ने उसे रातरानी के सामने पेश किया है और उसपर कई आरोप भी लगाए गए हैं। फिर भी छोटे बच्चों ने रातरानी को सजा देने से रोकने की कोशिश की। ये सभी बच्चे रोते थे क्योंकि रोने पर उन्हें लड्डू और बताशे मिलते थे। लेकिन सुनील के लिए वे मिठाई को समर्पित करने के लिए तैयार हो गए थे। क्योंकि सुनील उनसे बहुत प्यार करता था। उन्हें कभी नहीं पीटता था। वह उन बच्चों का चहेता था। छोटे बच्चों से जो प्यार करता है, बच्चे उन्हें अपना मानते हैं। सुनील को बच्चे अपना भाई मानते थे। इतना अपनापन और प्यार पानेवाला सुनील मेरी नजर में बहुत ऊँचा है। इसलिए मुझे भी सुनील पसंद है।

प्र.4. हमारे जीवन में नैतिक मूल्यों का बहुत महत्त्व है। हमारे समाज और राष्ट्र की उन्नति इन्हीं मूल्यों पर निर्भर है। पाठशाला में पढ़ने वाले बच्चे देश का कल है। अत: उन्हें नैतिक मूल्यों की जानकारी और उनपर अमल करना नितांत जरूरी है। ये नैतिक मूल्य निम्नलिखित हैं।

(1) ईमानदारी (2) सत्यता (3) विवेक (4) शिष्टाचार (5) सदाचार (6) अनुशासन (7) त्याग (8) कृतज्ञता आदि। इनपर अमल करने के लिए मैं कभी झूठ नहीं बोलूँगा। अपनों से बड़ों के प्रति सम्मान की भावना रखूँगा। उम्र में जो मुझसे छोटे हैं उनके प्रति स्नेह की भावना रखूँगा। मेरे माता-पिता का कहना मानूँगा। अपने सभी काम समय पर करूँगा। सार्वजनिक जगहों पर शांति बनाए रखूँगा और शिष्टाचार का पालन करूँगा। घर हो या पाठशाला अनुशासन का पालन करूँगा। कोई शैतानी नहीं करूँगा।

प्र.5.

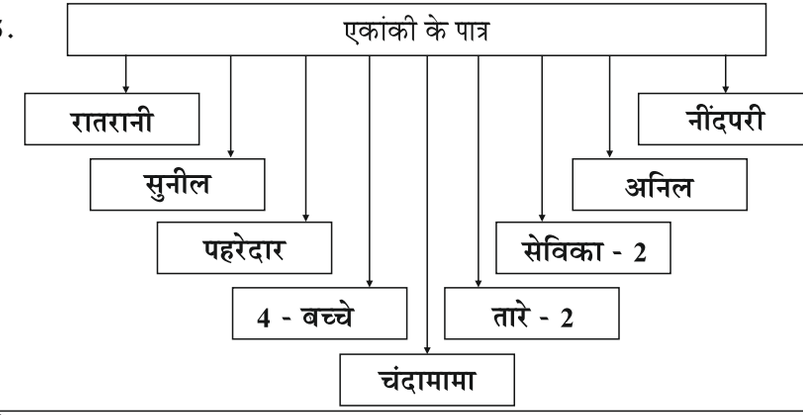

व्याकरण

(1)

समुच्चयबोधक अव्यय	विस्मयादिबोधक अव्यय
(1) हालाँकि	अच्छा!
(2) पर	हाँ!
(3) लेकिन	सचमुच!
(4) कि	शाबाश!
(5) ताकि	अरे!

(2) (1) **अकड़ना** - ठंड के कारण हाथों की उंगलियाँ अकड़ गईं।

(2) **डाँटना** - गलती करने पर पिताजी ने मुझे डाँटा।

(3) **चौंकना** - अचानक आकर बरसात ने हमें चौंका दिया।

(4) **शरमाना** - गलती पकड़ी जाने पर सीमा शरमा गई।

(3) (1) में, (2) पर, (3) के, (4) की, (5) से,
(6) का, (7) को, (8) ने, (9) री, (10) रे।

(4) गला फाड़कर रोना - **अर्थ :** जोर-जोर से रोना।

वाक्य : खिलौना टूट जाने के कारण बालक **गला फाड़कर रो** रहा था।

लेखन कौशल (Writing Skill)

★ मंगल ग्रह की विज्ञान कथा को संचार माध्यमों द्वारा चित्रित किया गया है। उड़न तश्तरी से एलियनों के आने की खबरें भी कई बार अखबारों में आती हैं और ये एलियन मनुष्य से भी तेज दिमाग के होते हैं। अगर मेरा घर मंगल ग्रह पर होता तो इन एलियनों से मेरी दोस्ती होती और हम मनुष्य जो नहीं कर सकते ऐसे कारनामे मैं अपने दोस्तों की सहायता से करता। क्रिश नाम की एक फिल्म में मैं इनके चमत्कार देख चुका हूँ।

यहाँ मुझे दो-दो चंदा मामा मिलते । एक का नाम फोबोस और दूसरे का डिमोज। ये चंदामामा भी धरती के चंदामामा से बिलकुल अलग। फोबोस तो

पश्चिम में उदित होता है और हर 11 घंटे बाद उदित होता है और पूर्व में अस्त होता है। और डिमोज पूर्व में ही उदित होता है लेकिन इसका दोबार उदित होने का कालावधि लगभग 2 दिन सात घंटे हैं।

हमारा दिन 24 घंटे का होता है लेकिन मंगल का दिन पृथ्वी से थोड़ा बड़ा होता है। लगभग 40 मिनट बड़ा अर्थात सोने खेलने के लिए 40 मिनट अधिक मिल जाते। यहाँ का वर्ष भी बहुत बड़ा होता है। 687 दिनों में एक वर्ष पूरा होता है। मतलब अगर मेरा घर मंगल पर होता तो मेरी उम्र लगभग आधी ही रहती।

ब्रह्मांड का सबसे ऊँचा पर्वत अलिंप मोंस मंगल पर है जो लगभग 24 कि.मी.ऊँचा है जिसे मैं अपनी आँखों से देख पाता। मैं खाने का और खास कर मीठा खाने का शौकीन हूँ, इसलिए मेरा वजन भी थोड़ा ज्यादा है। मुझे मिठाई खाने के लिए हरदम टोका जाता है। पर मंगल ग्रह पर मेरा वजन बहुत कम होता और मुझे मिठाई खाने से कोई नहीं टोकता। पृथ्वी पर 100 किलो वजन हो तो मंगल पर 37 किलो ही दिखाई देता है। है न मजे की बात!

छुट्टियों में मैं अपने दोस्तों को अपने घर बुलाता। उन्हें वहाँ ले आने के लिए उड़न तश्तरी भेजता। फिर जब मेरे मित्र मेरे घर आ जाते तो मैं उन्हें अपने घर के आस-पास की सैर कराता। हम बर्फ से खूब खेलते। और छुट्टियाँ खत्म होते ही मैं अपने दोस्तों को फिर से उड़न खटोले पर बिठाकर धरती पर छोड़ देता।

स्वयं अध्ययन

(1) सौर मंडल में सूर्य, ग्रह, उपग्रह, क्षुद्रग्रह, उल्का, धूमकेतु और खगोलिय धूल से बना है। सौर मंडल में आठ ग्रह, उनके 166 उपग्रह (चंद्रमा) पाँच बौने ग्रह और अरबों छोटे पिंड शामिल हैं। इन छोटे पिंडों में क्षुद्र ग्रह, धूमकेतु, उल्काएँ आदि हैं।

सौर मंडल के चार छोटे आंतरिक ग्रह हैं बुध, शुक्र, पृथ्वी और मंगल। फिर बृहस्पति, शनि, अरुण या युरेनस और वरुण या नेपच्यून। आंतरिक ग्रह और बाह्य ग्रहों के बीच यानि मंगल और बृहस्पति के बीच क्षुद्रग्रहों का घेरा है जिसमें सीरीस नामक एक बौना ग्रह भी है। सौरमंडल के छोर पर बहुत ही छोटे-छोटे अरबों पिंड विद्यमान हैं, जो धूमकेतु या पुच्छल तारे कहलाते हैं।

सौर मंडल के ये सभी आकाशीय पिंड स्वयं की और सूर्य की परिक्रमा करते हैं। पृथ्वी स्वयं की परिक्रमा 24 घंटे में पूरा करती है। इसके लिए उसे 23 घंटे, 56 मिनट और 4 सेकंड लगते हैं। पृथ्वी की यह दैनिक गति है जिसकी वजह से पृथ्वी पर दिन और रात होते हैं। पृथ्वी की वार्षिक गति भी है। पृथ्वी को सूर्य की परिक्रमा पूरी करने के लिए 365 दिन, 6 घंटे, 48 मिनट और 45 सेकंड लगते हैं। पृथ्वी की इस गति की वजह से पृथ्वी पर अलग-अलग ऋतुएँ होती हैं।

(2) सुनीता विलियम अंतरिक्ष में जाने वाली भारतीय मूल की दूसरी महिला है। अंतरिक्ष में वे सात बार जा चुकी हैं और 50 घंटे 40मिनट स्पेसवॉक करने वाली पहली महिला हैं। इनका जन्म 19सितंबर 1965 में युक्लिड (ओहियो राज्य) में हुआ। विवाह पूर्व इनका नाम सुनीता दीपक पांड्या था। इनके पति का नाम माइकल विलियम है। उनके पिता डॉ. दीपक पांड्या एम.डी.हैं. उनके पति माइकल विलियम नौसेना पोत चालक, हेलिकॉप्टर पायलट, पेशेवर नौसैनिक एवं गोताखोर हैं।

सुनीता को कई देश-विदेश के पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। जैसे - भारत सरकार द्वारा पद्मभूषण, नासा स्पेसफ्लाइट मेडल, रशिया द्वारा स्पेस अभियान दल में मेरिट आने के लिए, नेवी एंड मैरिन क्रॉप अचिवमेंट मेडल आदि। सुनीता 'महिला एक व्यक्तित्व अनेक' की सच्ची कहानी है। वे एक ऐसी असाधारण महिला हैं जिनके नाम अनेक रिकॉर्ड दर्ज हुए हैं। उन्होंने अंतरिक्ष में 194 दिन, 18घंटे रहकर विश्व रिकॉर्ड बनाया है। सुनीता में असाधारण इच्छाशक्ति, दृढता, उत्साह और आत्मविश्वास जैसे गुण होने के कारण ही वे इस तरह प्रतिमान बना पाईं। वे समुद्रों में तैराकी कर चुकी हैं, महासागरों में गोताखोरी कर चुकी हैं, युद्ध और मानव कल्याण के कार्य के लिए उड़ानें भर चुकी हैं, अंतरिक्ष तक पहुँच चुकी हैं और अब अंतरिक्ष से धरती पर आ चुकी हैं। सचमुच वे एक प्रेरणा बन चुकी हैं।

अंतरिक्ष यात्रियों के नाम :

(1) पहला अंतरिक्ष यात्री - यूरी गागरिन

(2) पहली महिला अंतरिक्ष यात्री - वेलेन्टिना तरेश्कावा

(3) पहला भारतीय अंतरिक्ष यात्री - राकेश शर्मा

(4) चाँद पर कदम रखनेवाला - नील आर्मस्ट्रांग

(5) सबसे अधिक उम्र का यात्री - कार्ल जी हैनिजे

(6) सबसे कम उम्र का अंतरिक्ष यात्री - गेरेमान तितोब

मेरी कलम से

★ **माँ** - (अपने-आप से) आज कुँजड़िन आएगी तो हरी सब्जी के लिए जरूर पूछूँगी।

पड़ोसन - भाभी जी कुँजड़िन आएगी तो मुझे भी आवाज देना।

माँ - हाँ, जरूर।

कुँजड़िन - सब्जी लेलो, सब्जी।

माँ - आ जा, तुम्हारी ही राह देख रही थी । (पड़ोसन से) ये लो, आ गई कुँजड़िन।

कुँजड़िन - आज सब्जी बहुत बढ़िया लाई हूँ और बहनजी मुझे आपके हाथ की बोहनी चाहिए।

माँ - देख, ये पालक की एक गड्डी दे दें, थोड़ा-सा हरा धनिया और पुदिना भी चाहिए।

कुँजड़िन - साथ में अदरक और हरी मिर्च दूँ क्या?

माँ - हाँ, एक-दो नींबू भी देना, पर दाम सही लगाना।

कुँजड़िन - बहन जी आप से मैंने कभी दाम ज्यादा लिया हैं क्या?

माँ - अब मेरा मुँह मत खुलवाओ। मीठा-मीठा बोलकर मुझ से अच्छे खासे रुपए ऐंठ लेती हो।

कुँजड़िन - अरे, अरे, ऐसी नाराज मत हो बहन। आप लोग मोलभाव करते हों, इसलिए थोड़ा बोलना ही पड़ता है।

माँ - चल बहाने मत बना। इनका मोल क्या हुआ।

कुँजड़िन - 50 रुपए बहनजी ।

माँ - अच्छा ले, अब थोड़ा कढ़ी पत्ता भी डाल दें।

कुँजड़िन - कल क्या लाऊँ आपके लिए?

माँ - कल मुझे गलके और करेले ले आना। आलू और प्याज अभी पड़े हैं।

कुँजड़िन - जी बहन जी (पैसे टोकरी की सब्जी को लगाकर बटवे में रखते हुऐ उठती है।) बहन जी थोड़ा हाथ लगाओ, उठाने में। (टोकरी सिर पर रखकर) सब्जी ले लो सब्जी, ताजी-ताजी सब्जी।

उपक्रम (Activity)

(1) विद्यार्थी उपक्रम स्वयं करें।

7. रहस्य

प्र.1. (1) (iv) अगली सुबह उसने मामा जी से कैमरा माँग लिया।

(iii) मामी जी को साथ बैठाकर मामा जी का फोटो लिया।

(I) कनिष्का ने मामा-मामी के साथ आर्यन के भी फोटो खींचे।

(ii) आर्यन ने कैमरा अपने पास रख लिया।

(2) (I) **आर्यन** — कैमरा पाकर खुश होने वाले व्यक्ति — **कनिष्का**

(ii) (1) रात में मामूली **रोशनी** में यह तसवीर खींच लेता है।

(2) रहस्य का पता लगाने का यह अच्छा **अवसर** था।

(3) (i) (1) प्रतिक्षा (2) निशा

(ii) (1) अँधेरा (2) उदास

(4) मेरा जन्मदिन 19 अगस्त को आता है। पिछले साल मैं ग्यारह साल का हुआ। उस वर्ष मेरे माता-पिता ने मेरा जन्मदिन बहुत धुमधाम से मनाया। सुबह हम सब मंदिर गए। माँ ने खाने में मेरी मनपसंद चीजें बनायी थी। शाम को पूरा घर गुब्बारों और रंगीन परदों से सजाया। घर में बड़ी चहल-पहल और प्रसन्न वातावरण था। नजदीक के रिश्तेदार, मेरे दोस्त और हमारे पड़ोसी जन्मदिन की शुभकामनाएँ देने आये थे। घर में खुशी का माहौल

था। अभी केक काटने का समय आया और उसी वक्त गाँव से मेरी दादी और बुआ जो पिछले कई साल मुंबई में नहीं आए थे वे मेरे जन्मदिन के अवसर पर घर आए। उन्हें देखकर मेरी खुशी का तो ठिकाना ही नहीं रहा। दादी माँ ने दौड़कर मुझे गले लगाया। खुशी से मेरे आँखों के आँसू रुक ही नहीं रहे थे। इसके बाद मैंने केक काटा। सभी ने मेरे दीर्घायु होने की कामना की। मेरी दादी और बुआ ने मुझे बहुत स्नेह से आशिर्वाद दिया। मेरी दादी और बुआ का मेरे जन्मदिन पर आना मेरे लिए 'सरप्राइझ गिफ्ट' था। यह प्रसंग मैं मेरे जीवन में कभी नहीं भूलूँगा।

प्र.2. (1)

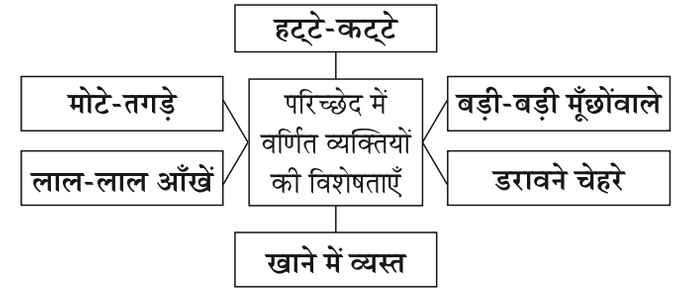

(2) (i) (1) नारायणपुर (2) सवेरे-सवेरे, शाम

(ii) (1) कैमरा निकाला (2) वे घर की ओर चल पड़े।

(3) (i) **आँख** - आँखों का तारा होना।

चेहरा - चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना।

(ii) (1) बत्ती (2) दुकानें

(4) लक्ष्य प्राप्त करने की मन में इच्छा हो तो साहस अपने आप आता है। साहस हो तो रास्ते में आनेवाली सारी कठिनाईयाँ सहज दूर हो जाती है। दृढ़ निश्चय और साहस हो तो कोई भी कार्य नामुमकीन नहीं है। निश्चय अगर दृढ़ हो तो प्रतिकूल परिस्थितियाँ भी अनुकूल बनाने का साहस मन में आता है। दृढ़ निश्चय साहस करने के लिए प्रेरित करता है और सबकुछ संभव कराता है। मन में दृढ़ निश्चय हो तो साहस के बल पर हम संघर्ष करके सफलता प्राप्त कर सकते है। दृढ़ निश्चय हो तो व्यक्ति अथक परिश्रम से सारी बाधाओं का सामना करते हुए लक्ष्य प्राप्त करने की कोशिश करते है।

जिसके पास दृढ़ निश्चय, आत्मविश्वास और साहस है उसे जीवन में आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता। दृढ़ निश्चयी व्यक्ति को निराश होने की जरूरत ही नहीं पडती। अपने साहस से वह उज्जवल भविष्य को निश्चित करता है।

स्वाध्याय

प्र.1. (अ) (1) सन्नाटा (2) वैज्ञानिक
(3) कारतूसों (4) सावधानी

(आ) (क) - नारायणपुर, (ख) - कपोल कल्पना, (ग) - कहकहों की आवाज

प्र. 2. (4) अब जमींदार का परिवार खत्म हो गया है।
(3) आर्यन ने कनिष्का से कुछ सलाह-मशविरा किया।
(1) आर्यन और कनिष्का दबे पाँव हवेली में चले गए।
(2) सभी डाकुओं के आतंक से मुक्त हो गए।

बताओ तो सही

प्र.3. **घर में -** मुझे याद है चलते समय किसी ने जुकाम के कारण भी छींक दिया तो मेरे दादाजी जाना स्थगित कर देते थे। क्योंकि उनका मानना था कि छींक के कारण उनके काम सिद्ध होने में बाधा आएगी।

विद्यालय में - विद्यालय में प्रतिभा प्रदर्शन प्रतियोगिता थी। तब मैंने जादू के छोटे-मोटे खेल किए। नारियल से फूल निकालकर मैंने सबको चौंका दिया। फिर सभी को बता भी दिया कि नारियल में छेद करके मैंने फूलों की कलियाँ कल ही नारियल में डाल दी थीं। आज वे कलियाँ नारियल में स्थित पानी के कारण खिल गई थीं । सबके सामने नारियल तोड़ने पर उसमें फूल इसलिए निकले। यह जादू नहीं बल्कि हाथ की सफाई है।

परिवेश में - अपने परिवेश में मैंने अपने साथियों के साथ मिलकर एक संघटना बनाई है। गणेश विसर्जन के समय पानी में मूर्तियाँ और निर्माल्य का विसर्जन होने से जल प्रदूषण होता है।

प्र.4. (1) आर्यन और कनिष्का हवेली का रहस्य जानने रात के अँधेरे में हवेली पहुँचे। हवेली में बीचोंबीच एक बड़ा कमरा था जिसका दरवाजा अंदर से बंद था। कमरे की खिड़कियाँ नीचे से बंद थीं लेकिन ऊपर से खुली थीं। खिड़की से

अंदर झाँककर देखा तो हट्टे-कट्टे, मोटे-तगड़े, बड़ी-बड़ी मूँछोंवाले कई लोग पगड़ी बाँधे बैठे थे। कुछ लोगों ने कमीज़ और पैंट भी पहनी थी। सब खाने में मस्त थे लेकिन सबके चेहरे डरावने थे। उनके पास बंदूकें, तलवारें और कारतूस थे। अंदर गैस बत्ती की तेज रोशनी थी।

(2) जिस हवेली में भूतों का डेरा होने की बात गाँव में सब लोग कहते थे उस हवेली का रहस्य जानने के लिए आर्यन और कनिष्का मामा जी का कैमरा लेकर रात के अँधेरे में गए थे। उन्होंने हवेली में मौजूद लोगों के कई फोटो खींचे। फिर आर्यन ने नारायणपुर जाकर सारे फोटो तैयार करवाए और मामा जी को दिखाए। फिर मामा जी को साथ लेकर वे थानेदार के पास गए। थानेदार ने फोटो देखते ही पहचान लिया कि ये वही लोग हैं जिनकी तलाश पुलिस को थी। हवेली में जो डाकू थे उनकी तलाश पिछले कई वर्षों से पुलिस कर रही थी। डाकुओं के इस गिरोह ने कई वर्षों से उत्पात मचा रखा था। डकैती और राहजनी इनका पेशा था। ऐसे खतरनाक लोगों का ठिकाना ढूँढ़कर आर्यन और कनिष्का ने बहादुरी का काम किया था। पुलिस की मदद से उन्हें पकड़वाकर दोनों ने गाँववालों को डाकुओं के आतंक से मुक्त किया था। क्योंकि पुलिस के छापे में कुछ डाकू पकड़े गए थे और कुछ मारे गए थे।

इसी बहादुरी के लिए आर्यन और कनिष्का को 'वीरता पुरस्कार' घोषित हुआ।

व्याकरण

प्र.1.

(1) मछुआरे ने जाल फेंका।
(2) पायल ने मछलियों को चारा दिया।
(3) नाविक ने पतवार से नाव चलाई ।
(4) रामू ने माला को नारियल तोड़कर दिए।
(5) रामू ने पेड़ से नारियल तोड़े।
(6) राजू का घर नदी के किनारे है।
(7) रामू नारियल के पेड़ पर चढ़ा।
(8) पानी में मछलियाँ तैर रही हैं।

प्र.2. (1) खाट पकड़ना - **अर्थ :** बीमार होना।

वाक्य : बारिश में भीगकर राहुल ने **खाट पकड़ ली**।

(2) करवटें बदलना - **अर्थ :** बेचैन रहना।

वाक्य : गरमी के कारण मैं रातभर **करवटें बदलती** रही।

(3) कमर कसना - **अर्थ :** दृढ़ संकल्प करना।

वाक्य : परीक्षा में अच्छे अंक पाने के लिए सभी छात्रों ने **कमर कस ली** है।

(4) तारीफ के पुल बाँधना - **अर्थ :** प्रशंसा करना।

वाक्य : राज **तारीफ के पुल बाँधते** हुए अपनी विदेश यात्रा का वर्णन कर रहा था।

(5) खून पसीना एक करना - **अर्थ :** कड़ी मेहनत करना।

वाक्य : पिता अपनी **खून पसीना एक करके** कमाई हुई दौलत को बेटे को बरबाद नहीं करने देंगे।

प्र. 3. सामान्य भूतकाल - ठिकाना मैंने बताया।

सामान्य भविष्यत्काल - ठिकाना मैं बताऊँगा।

अपूर्ण वर्तमानकाल - ठिकाना मैं बता रहा हूँ।

अपूर्ण भूतकाल - ठिकाना मैं बता रहा था।

पूर्ण वर्तमानकाल - ठिकाना मैंने बताया है।

पूर्ण भूतकाल - ठिकाना मैंने बताया था।

स्वयं अध्ययन

★

	हिंदी	मराठी
(1)	बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद	गाढवाला गुळाची चव काय?
(2)	एक पंथ दो काज	एका दगडात दोन पक्षी मारणे.
(3)	जो गरजते हैं वे बरसते नहीं	गरजेल तो बरसेल काय?
(4)	दूर के ढोल सुहावने	दुरून डोंगर साजरे.
(5)	बगल में छोरा शहर में ढिंढ़ोरा	काखेत कळसा नि गावाला वळसा.
(6)	बूँद बूँद से घट भरता है	थेंबे थेंबे तळे साचे.
(7)	साँच को आँच नहीं	सत्याला मरण नाही.
(8)	डूबते को तिनके का सहारा	बुडत्याला काडीचा आधार.
(9)	खोदा पहाड़ निकली चुहिया	डोंगर पोखरून उंदीर काढणे.
(10)	ढाक के तीन पात	पळसाला पाने तीनच.

लेखन कौशल (Writing Skill)

सदैव ध्यान में रखो।

★ हम बचपन से सुनते और मानते आ रहे हैं कि अपने से बड़ों की आज्ञाओं का पालन करना चाहिए। ऐसा इसलिए कहा जाता है क्योंकि उनके अनुभव और ज्ञान से हमारा मार्गदर्शन होता है। उनका आशीर्वाद भी हमारा मनोबल बढ़ाने में मदद करता है। यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है।

फिर भी बिना कोई सवाल किए आज्ञा मानना समाज और संस्कृति को पतन की ओर ले जाता है। आज्ञाकारी होने का मतलब है कि जो कुछ बड़ों ने कहा वह सत्य है। अगर उस सत्य को हम मान लेंगे तो हमारी बुद्धि नष्ट हो जाएगी। सत्य का प्रभुत्व होना ही चाहिए लेकिन वह विज्ञाननिष्ठ और तर्कसंगत हो। यह बंदिश नहीं होनी चाहिए कि चीजों को पुराने रीति रिवाजों के अनुसार ही करना है। हमें हर चीज को अपनी बुद्धि की कसौटी पर परखना चाहिए और बेहतर से बेहतर समाधान खोजना चाहिए। इस पाठ के आर्यन और कनिष्का ने बड़ों की आज्ञा का पालन नहीं किया क्योंकि भूत-वूत केवल काल्पनिक बातें हैं यह उनकी बुद्धि ने उन्हें बताया और तभी वे गाँव वालों को डाकुओं के आंतक से मुक्त कर पाए।

उपक्रम (Activity)

★ **पात्र** : आर्यन, कनिष्का, थानेदार, मामा जी

आर्यन : कनिष्का मैं सारे फोटो बनवाकर ले आया हूँ।

कनिष्का : आर्यन ये तसवीरें तो भूतों की नहीं लगती। चलो हम मामा जी को दिखाते हैं।

कनिष्का : (फोटो दिखाते हुए) आप कहते हो भूतों के पैर उलटे होते हैं, उनकी छाया नहीं होती, उनके फोटो नहीं ले सकते। देखिए ये भूतों के फोटो हमने कल रात हवेली जाकर लिए हैं।

मामा जी : (परेशान होकर) तो क्या भूत इनसानों जैसे होते हैं?

आर्यन : इनसानों जैसे नहीं, मामा जी इनसान ही भूत हैं। देखिए न, इनके पैर भी सीधे हैं, इनकी छाया भी है और इनके फोटो भी लिए गए हैं। असल में यह अफवाह मात्र है कि हवेली में भूत हैं।

कनिष्का : और नहीं तो क्या! इन लोगों का रहस्य न खुले इसलिए इन्होंने ही हवेली में भूत होने ही अफवाह फैलाई ताकि लोग उधर न जाएँ और ये अपने काम बिना रोक-टोक के करते रहें।

आर्यन : मुझे तो यह मामला गड़बड़ लगता है। मामा जी क्या आप मेरे साथ थाने चलेंगे?

मामा जी : तुम सही हो बच्चों, चलो ये तसवीरें थानेदार को दिखाएँगे। (मामा जी आर्यन और कनिष्का के साथ थाने जाते हैं।

थानेदार : (तसवीरें देखकर) अरे ये तो बहुत बड़ा डाकुओं का गिरोह है। कई वर्षों से ये डकैती और राहजनी कर उत्पात मचा रहे हैं। पुलिस ने इनको पकड़ने के लिए खून-पसीना एक कर दिया था। शाबाश! तुम दोनों ने बहुत बहादुरी का काम किया है। कहाँ हैं ये लोग?

आर्यन : आप तैयारी कीजिए, ठिकाना मैं बताता हूँ। (और उसी रात पुलिस ने भूतों के डेरे पर छापा मारकर गाँववालों को डाकुओं के आंतक से मुक्त कराया।)

वाचन जगत से

★ विद्यार्थी स्वयं करें।

---

8. हम चलते सीना तान के

प्र.1. (1)

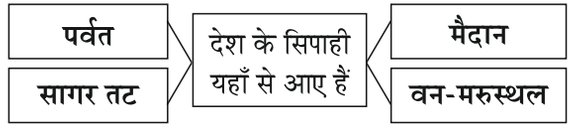

(2)

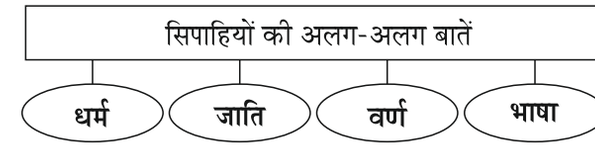

(3) देश के सिपाही अलग-अलग धर्म के हों या अलग-अलग जाति के हों, उनका वर्ण, उनकी भाषा चाहे अलग हो, लेकिन सबसे पहले वे हिंदुस्तानी हैं। भले ही वे देश के किसी भी कोने से क्यूँ न आए हों, जैसे कि पर्वतीय प्रदेश हो या सागर तट, हरे-भरे वन हों या उजड़ा रेगिस्तान या फिर मैदान, फौजी वर्दी पहनकर वे सबसे पहले बने हैं हिंदुस्तान के और बेटे बने हैं भारत माता के जो सीना तान कर गर्व से चले हैं।

प्र.2. (1) (i)

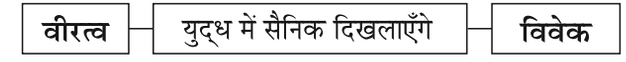

(ii)

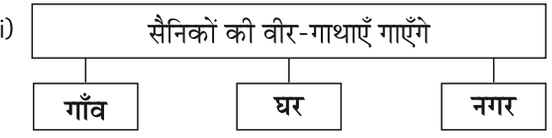

(2) (i) (1) हम सबसे आगे रहते अवसर पर **बलिदान** के।

(2) अनगिन कंठों में गूँजेंगे बोल हमारे **गान** के।

(ii) (1) युद्ध - **समर** (2) झंडा - **निशान**

(3) युद्ध में हम अपनी वीरता और विवेक का ऐसा परिचय देंगे कि उसकी कहानियाँ देश के गाँव, नगर और घर-घर में परिचित हो जाएँगी। हमारी वीर गाथाएँ गीत बनकर अनगिनत देशवासियों के कंठों से फूट पड़ेंगी। समर्पण के ये गीत गाते हुए हम सीना तानकर आगे बढ़ते हैं।

प्र.3. (1) डॉ. हरिवंशराय बच्चन

(2) हम गिर जाएँ किंतु न गिरने देंगे देश निशान को, हम मिट जाएँ किंतु न मिटने देंगे हिंदुस्तान को, हम सबसे आगे रहते अवसर पर बलिदान के। भारतमाता के बेटे हम चलते सीना तान के।

(3) भले ही हम गिर जाएँ लेकिन देश के झंड़े को गिरने नही देंगे। हमेशा उसका सम्मान बनाए रखेंगे। देश का नाम हमें दुनिया में रोशन करना है। देश के

लिए अपना तन-मन-धन न्योछावर करने के लिए और देश के लिए बलिदान करने में पीछे नहीं हटेंगे। देश की सेवा, देश का रक्षण करने के लिए यह पंक्तियाँ प्रेरित करती है और उसका सम्मान करने की सीख देती है।

(4) हिंदुस्तान के कण-कण में समता, ममत्व और अपनापन है। देश की रक्षा करने के लिए और देश की मिट्टी का कर्ज उतारने के लिए समर्पण और त्याग करना चाहिए। आज के बालकों को देश के रक्षक, सिपाही बनकर आगे बढ़ना है। समता, बंधुत्व का पाठ हमें यह कविता सीखाती है। देश के झंड़े का सम्मान करना चाहिए। देश में रहनेवाले लोग अलग जाति, अलग धर्म और अलग वर्ण के हो लेकिन सबसे पहले वह हिंदुस्तानी है यह बात हमेशा याद रखनी चाहिए।

स्वाध्याय

प्र.1. (1) वन- मरुस्थल (2) रजकण (3) श्रम

(4) निशान (5) वीरत्व-विवेक

प्र.2. (अ) (1) इस देश की मिट्टी में हम खेले हैं, खा-पीकर बड़े हुए हैं। देश की मिट्टी के कण-कण से हमें ममता और स्नेह मिला है। इस मिट्टी ने कभी हमारे बीच भेदभाव नहीं किया। इस मिट्टी के कण-कण का हम पर कर्ज है जो हमें चुकाना है। हम भारत माता की संतानें हैं और सीना तानकर आगे बढ़ते हैं।

(2) देश पर अगर शत्रुओं का आक्रमण हुआ तो हम अपनी वीरता और विवेक का ऐसा परिचय देंगे कि उसकी कहानियाँ भारत के गाँव, नगर और घर-घर में गाई-सुनाई जाएँगी। हमारी वीर गाथाएँ गीत बनकर अगणित देशवासियों के कंठों से फूट पड़ेंगी। समर्पण के ये गीत गाते हुए हम सीना तानकर आगे बढ़ते हैं।

(आ) प्रस्तुत कविता हरिवंशराय बच्चन द्वारा लिखा एक अभियान गीत है। इस रचना के माध्यम से कवि ने समता एवं बंधुता का महत्त्व प्रतिपादित किया है। प्रकृति ने भारत को भले ही मैदानों और पर्वतों में बाँट दिया हो परंतु स्थानभिन्नता से फर्क नहीं पड़ता, ना ही धर्म, जाति-पाँति या भाषा

देशवासियों को बाँट सकती है। इस देश के कण-कण में समता, ममत्व, अपनापन है। देश की रक्षा करने के लिए और देश की मिट्टी का कर्ज उतारने के लिए समर्पण और त्याग हमारा इतिहास रहा है। हम बच्चे भी उन्हीं के वंशज हैं। बलिदान का अवसर मिलने पर पीछे नहीं हटेंगे। मिट जाएँगे लेकिन देश के झंडे को गिरने नहीं देंगे। इतना उत्कट देशप्रेम देश के हर बालक में है। यही इस कविता का केंद्रीय भाव है।

(इ) **राष्ट्रीय ध्वज** - तिरंगा **राष्ट्रीय पुष्प** - कमल

राष्ट्रीय पक्षी - मोर **राष्ट्र गान** - जन-गण-मन

राष्ट्रीय नदी - गंगा **राष्ट्रीय जलचर** - डॉलफिन

राष्ट्रीय प्रतीक - अशोकस्तंभ **राष्ट्रीय पशु** - बाघ

राष्ट्रीय गीत - वंदे मातरम् **राष्ट्रीय फल** - आम

राष्ट्रीय मुद्रा - रुपया **राष्ट्रीय पेड़** - बरगद

(ई) **'विविधता में एकता**
भारत की है विशेषता'

हमारे देश में अनेक धर्म और जाति के लोग प्रेमभाव से मिल-जुलकर रहते हैं। हमारा खान-पान, रहन-सहन एक-दूसरे से भिन्न है। हमारी खुशियाँ, हमारे त्योहार, उत्सव, पर्व सब अलग-अलग हैं। हमारी वेश-भूषा भी एक-दूसरे से मेल नहीं खाती परंतु हमारी आत्मा एक है।

हम भले ही अलग-अलग भाषा बोलते हैं परंतु एक-दूसरे के सुख-दुख साझा करते हैं। हमारे पुरखों ने हमें मानवता का पाठ पढ़ाया है। हम सबका देश एक है। हम सब सबसे पहले भारतवासी हैं।

खोजबीन :

राज्य	भाषा	राज्य	भाषा
जम्मू एवं कश्मीर	कश्मीरी	हिमाचल प्रदेश	हिंदी
पंजाब	पंजाबी	उत्तराखंड	हिंदी
उत्तर प्रदेश	हिंदी	राजस्थान	हिंदी
प. बंगाल	बंगाली	छत्तीसगढ़	छत्तीसगढ़ी
झारखंड	हिंदी	सिक्किम	नेपाली
नागालैंड	बंगाली	मिजोरम	बंगाली
असम	असमिया	त्रिपुरा	बंगाली
ओडिशा	ओरिया	महाराष्ट्र	मराठी
कर्नाटक	कन्नड	दमन और दीव	गुजराती
गोवा	कोंकणी	आंध्र प्रदेश	तेलगु
लक्षद्वीप	मल्यालम	तमिलनाडु	तमिल
अंदमान निकोबार	बंगाली	तेलंगणा	तेलगु
हरियाणा	हिंदी	मेघालय	बंगाली
दिल्ली	हिंदी	गुजरात	गुजराती
मध्य प्रदेश	हिंदी	दादरा और	गुजराती
बिहार	हिंदी	नगर हवेली	
अरुणाचल प्रदेश	बंगाली	केरल	मल्यालम
मणिपुर	मणिपुरी	पुडुचेरी	तमिल

व्याकरण

★ (1) **विस्मयार्थक वाक्य** – वाह! क्या बनावट है ताजमहल की !

(2) **विधानार्थक वाक्य** – बच्चे हँसते-हँसते खेल रहे थे।

(3) **निषेधार्थक वाक्य** – माला घर नहीं जाएगी।

(4) **इच्छार्थक वाक्य** – खूब पढ़ो, खूब बढ़ो।

(5) **संकेतार्थक वाक्य** – यदि बिजली आएगी तो रोशनी होगी।

(6) **प्रश्नार्थक वाक्य** – इसे हिमालय क्यों कहते हैं?

(7) **आज्ञार्थक वाक्य** – सदैव सत्य के पथ पर चलो।

(8) **संभावनार्थक वाक्य** – कश्मीर का सौंदर्य देखकर तुम्हें आश्चर्य होगा।

अध्ययन कौशल

★ **मुहावरे :**

(1) अक्ल का पत्ता खोलना = तरकीब बताना।

(2) अनाप-शनाप बोलना = निरर्थक बातें करना।

(3) आँखें खुली की खुली रहना = चकित रह जाना।

(4) कमर कसना = दृढ़ संकल्प करना।

(5) करवटें बदलना = बेचैन रहना।

(6) खाट पकड़ना = बीमार होना।

(7) खून-पसीना एक करना = कड़ी मेहनत करना।

(8) गला फाड़कर रोना = जोर जोर से रोना।

(9) गले लगाना = प्यार से मिलना।

(10) चार चाँद लगाना = शोभा बढ़ाना।

(11) जी की कली खिलना = खुश होना।

(12) ठगा सा रह जाना = चकित होना।

(13) ठान लेना = निश्चय करना।

(14) तारीफ के पुल बाँधना = प्रशंसा करना।

(15) तुनककर बोलना = चिढ़कर बोलना।

(16) दरार पड़ना = दूरी बढ़ना।

(17) दाव पर लगाना = कुछ पाने के लिए बदले में कुछ लगाना।

(18) दिन दूनी-रात चौगुनी उन्नति = तेज गति से विकास।

(19) दुखड़ा रोना = दुख सुनाना।

(20) मात देना = पराजित करना।

(21) मुँह लटकाना = उदास होना।

(22) सिर आँखों पर रखना = स्वीकार करना।

(23) सीना तानकर चलना = गर्व से चलना।

(24) हथियार डालना = आत्मसमर्पण करना।

कहावतें :

(1) अंत भला तो सब भला = परिणाम अच्छा तो सब अच्छा।

(2) एक और एक ग्यारह = एकता में बल।

(3) चिराग तले अँधेरा = योग्य व्यक्ति के आसपास ही अयोग्यता।

(4) जहाँ चाह, वहाँ राह = इच्छा होने पर मार्ग मिलता है।

(5) दूध का दूध पानी का पानी करना = सही न्याय करना।

मेरी कलम से

★ विद्यार्थी स्वयं कृती करें।

सुनो तो जरा

(1) 26/11 के आतंकी हमले को मुंबईवासी ही नहीं बल्कि दुनिया भी भुला नहीं सकती। इसी आतंकी हमले में शहीद हुए ब्लैक कमांडो के मेजर संदीप उन्नीकृष्णन। अपनी छोटी सी जिंदगी में उन्होंने ऐसी वीरता का परिचय दिया कि देशवासियों के दिलों में बस गए।

इनका जन्म 15 मार्च 1977 को बैंगलोर में स्थित नायर परिवार में हुआ। इनका मूल गाँव चेरुवनूर, केरल में स्थित है। परंतु इनके पिताजी सेवानिवृत्त होने के बाद बैंगलोर में बस गए। आई.एस.आर.ओ. अधिकारी के. उन्नीकृष्णन और धनलक्ष्मी उन्नीकृष्णन के संदीप इकलौते पुत्र थे।

इनकी शिक्षा फ्रैंक एंथोनी पब्लिक स्कूल, बैंगलोर में हुई। 1995 में उन्होंने विज्ञान की स्नातक उपाधि प्राप्त की और फिर वे एन्.डी.ए. में शामिल हो गए। 12 जुलाई 1999 को उन्हें बिहार रेजिमेंट में लेफ्टिनेंट के पद पर नियुक्त किया गया। हमले और चुनौतियों का सफर वहाँ से शुरू हो गया। वे एक ऐसे लोकप्रिय

अधिकारी थे जिन्हें उनके वरिष्ठ और कनिष्ठ दोनों पसंद करते थे। सेना के सबसे कठिन कोर्स 'घातक कोर्स' में वे अव्वल रहे। बहादुरी के उनके जजबे को देखकर ही उन्हें एन.एस.जी. कमांडो सेवा के लिए चुना गया। जुलाई 1999 में ऑपरेशन विजय के दौरान उन्होंने अपनी वीरता का परिचय दिया।

26 नवंबर 2008 की रात ताज होटल के ऑपरेशन में वे टीम कमांडर थे। 10 कमांडो के एक समूह के साथ उन्होंने होटल में प्रवेश किया और होटल की छठी मंजिल पर पहुँचे। तीसरी मंजिल पर आतंकवादियों को पाकर उन्होंने उनसे कड़ा मुकाबला किया। उनके प्रमुख सहयोगी सुनील यादव इस मुठभेड़ में घायल हुए। आतंकवादियों से भयंकर मुठभेड़ करते हुए उन्होंने सुनील यादव को इलाज के लिए बाहर निकालने की व्यवस्था की। अपनी सुरक्षा को ताक पर रखकर आतंकवादियों का पीछा किया। आतंकवादियों की एक गोली पीछे से लगी और वे गंभीर रूप से घायल हुए। अंत में 28 नवंबर 2008 को उनकी मृत्यु हो गई। पूरे सैनिक सम्मान के साथ बैंगलोर में उनके अंतिम संस्कार किए गए। उनकी बहादुरी के लिए 26 जनवरी 2009 को उन्हें मरणोपरांत 'अशोक चक्र' से सम्मानित किया गया।

(2) विद्यार्थी स्वयं करें।

अभ्यास - 2

(1) ◆ **यातायात सप्ताह**

(अ)

(ब) **सड़क सुरक्षा के नारे**

- शॉर्ट कट का ना करो चुनाव क्योंकि
  इससे जीवन हो सकता है शॉर्ट।
- जन भली कि गाड़ी भली, सड़क कहती सुरक्षा भली।
- सुरक्षा के नियमों का करो सम्मान,
  न होगी दुर्घटना, न होंगे परेशान
- पहने हेल्मेट, रहे सुरक्षित
  पहने सीट बेल्ट, रहे सुरक्षित।

◆ छात्र इसी प्रकार से अन्य पोस्टर बना सकते हैं।

◆ **क्रीड़ा सप्ताह**

(अ)

तंदुरुस्ती है वहाँ, खेलकूद है जहाँ

(ब)

स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मन,
क्रीड़ा जीवन, उत्तम साधन.

(2) **(1) सरल वाक्य** - बाईं और दाईं ओर सड़क है।
भारत देश राष्ट्रीय एकात्मता का उत्तम उदाहरण है।
पानी का बरसना उत्तम है।

(2) मिश्र वाक्य - सड़क की बाईं ओर घर है वहीं दाईं ओर कुआँ है।
घर की बाईं ओर कुआँ है वहीं दाईं ओर सड़क है।

(3) संयुक्त वाक्य - यह रहा घर और यह रहा कुआँ।
घर की बाईं ओर कुआँ है।

(3) **(1) सामान्य वर्तमानकाल** - रमेश पुस्तक पढ़ता है।

(2) अपूर्ण वर्तमानकाल - रमेश पुस्तक पढ़ रहा है।

(3) पूर्ण वर्तमानकाल - रमेश ने पुस्तक पढ़ी है।

(4) सामान्य भूतकाल - रमेश ने पुस्तक पढ़ी।

(5) अपूर्ण भूतकाल - रमेश पुस्तक पढ़ रहा था।

(6) पूर्ण भूतकाल - रमेश ने पुस्तक पढ़ी थी।

(7) सामान्य भविष्यकाल - रमेश पुस्तक पढ़ेगा।

(4)

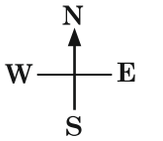

पाठशाला	दवाई की दुकान	रुपया	डॉलर
जिब्रा क्रॉसिंग	यातायात का सिग्नल	पेय जल	दिशा दर्शक चिह्न

		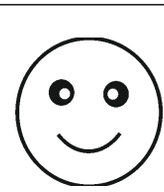	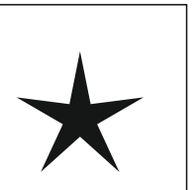
संगीत	न्यायालय	खुशी	अपाहिजों के लिए

प्रसाधनालय	वाय फाय	खतरा

अभ्यास - 3

भालू ने दिया दोस्ती का सबक

अमित और सुमित नाम के दो मित्र थे। दोनों साथ में व्यवसाय करते थे। काम के सिलसिले में कई बार दोनों को साथ में यात्रा भी करनी पड़ती थी। एक बार वे दोनों रामगढ़ से सुजानगढ़ जा रहे थे। रास्ते में जंगल पड़ता था। दोपहर का समय था। बगल में पानी का झरना देखा तो दोनों पेड़ की छाया में रोटी खाने बैठ गए।

तभी अचानक उन्होंने एक भालू को अपनी तरफ आते देखा। अमित ने सुमित से कहा, ''भाग जल्दी, भालू आया। सुमित भी दौड़ने लगा। लेकिन भालू से बचने के लिए इतना काफी नहीं था। अमित ने सुमित से कहा, ''पेड़ पे चढ़ो। भालू पेड़ पर नहीं आएगा।'' पर सुमित को तो पेड़ पर चढ़ना ही नहीं आता था। अमित को वह कहता रहा, ''पहले मुझे चढ़ाओ फिर तुम जल्दी से चढ़ जाना।'' पर घबराहट में उसने मित्र की बात को अनसुना कर दिया।

सुमित ने सोचा, 'अब मौत निश्चित है।' डर के मारे उसके पैर भी जमीन से उठ नहीं रहे थे। वह वहीं जमीन पर लेट गया। भालू नजदीक आया तो उसने साँस रोक ली। भालू ने उसे सूँघा और मरा हुआ समझकर छोड़ दिया और आगे चला गया। अमित पेड़ पर छिपा यह तमाशा देख रहा था। उसकी समझ में कुछ भी नहीं आया। भालू दूर चला गया तब वह पेड़ से नीचे उतरा। उसने सुमित से पूछा, ''भाई, भालू तुम्हारे कान में क्या कहकर गया?'' सुमित ने कहा, ''स्वार्थी मित्र से दूर रहो।'' अमित बहुत लज्जित हुआ। उसने सुमित से माफी माँगी। पर सुमित ने उससे मित्रता तोड़ दी। सचमुच, मुसीबत के समय में ही सच्चे मित्र की पहचान होती है।

सीख - स्वार्थी मित्रों से दूर रहना चाहिए।

पुनरावर्तन - 2

(1)

शब्द	पंचमाक्षर	उसी वर्ग के अन्य शब्द
पंकज	ङ	**कंगन, संघ, लंका**
चंचल	ञ्	**झंझा, जंजाल, फ्रेंच**
ठंडा	ण्	**डंडा, टंटा, ढिंढोरा**
संत	न्	**हिंदी, मंद, निबंध**
पेरांबूर	म्	**परंपरा, संपादक, लंबा**
पंछी	ञ्	**पंचप्राण, संचय,संज्ञा**
बंदरगाह	न्	**संतोष, पंथ, जंतर-मंतर**
उमंग	ङ	**पंकज, मंगल, बंगाल**

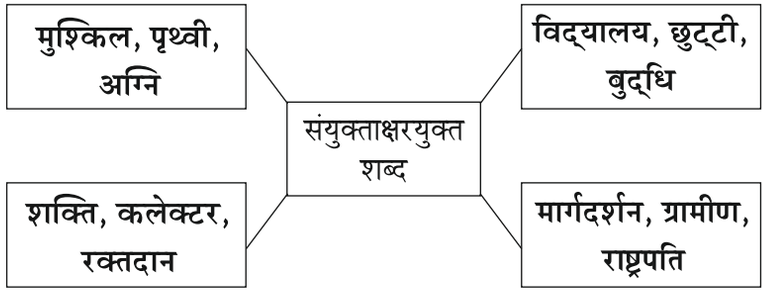

(2) संयुक्ताक्षरयुक्त शब्द

- मुश्किल, पृथ्वी, अग्नि
- विद्यालय, छुट्टी, बुद्धि
- शक्ति, कलेक्टर, रक्तदान
- मार्गदर्शन, ग्रामीण, राष्ट्रपति

उपक्रम

(1) विद्यार्थी स्वयं कृती करें।

(2) (अ) (1) किन लोगों को रक्तदान करना चाहिए?

(2) वैज्ञानिक युग में कौनसा दान श्रेष्ठ है?

(3) धर्म का पालन करने से किसकी प्राप्ति होती है?

(4) बीमार के प्राण बचाने के लिए हम क्या कर सकते हैं?

(आ) (1) गाडगे बाबा का पूरा नाम क्या था?

(2) गाडगे बाबा कौन सा कार्य करते थे?

(3) गाँव के लोग गाडगे बाबा को पैसे क्यों देते थे?

(4) गाडगे बाबा ने पैसों का उपयोग किन कार्यों के लिए किया?

(3) **प्रथम सत्र :** सौंदर्य प्रसाधन के प्रचार प्रसार हेतु विज्ञापन

द्‌वितीय सत्र : क्रीड़ा महोत्सव

(4) सुभद्रा कुमारी चौहान को राष्ट्रीय वसंत की प्रथम कोकिला का बिरूद दिया गया था। क्योंकि झाँसी की रानी पर लिखी उनकी कविता ज... का हार बनी थी। कविता के बोल हैं,

'चमक उठी सन सत्तावन में
वह तलवार पुरानी थी
बुंदेले हर बोलें के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मरदानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

इनकी रचनाओं में ऐसी ऊर्जा है कि मरणासन्न व्यक्ति भी लड़ने को तैयार हो जाएगा। बीसवीं सदी की सर्वाधिक यशस्वी और प्रसिद्ध कवि-कवयित्रियों में वे अग्रणी हैं।

इनका जन्म 16 अगस्त 1904 को इलाहाबाद के निकट निहालपुर नामक गाँव में हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव में ही पिता की देख-रेख में हुई। 1919 में खंडवा के ठाकुर लक्ष्मण सिंह से विवाह हुआ और फिर वे जबलपुर आ गईं। 1921 में गांधीजी के असहयोग आंदोलन में भाग लेने वाली वे पहली महिला थीं। आजादी की लड़ाई में दो बार वे जेल भी गईं। उनकी बेटी सुधा चौहान ने उनकी जीवनी तेज-से-तेज नामक पुस्तक में लिखी है। एक कार दुर्घटना में 15 फरवरी, 1948 को उनकी आकस्मिक मृत्यु हुई।

भारतीय तटरक्षक सेना ने 28 अप्रैल, 2006 में सुभद्राकुमारी जी की राष्ट्रीय भावना को सम्मानित करने के लिए अपने तटरक्षक जहाज को 'सुभद्राकुमारी चौहान, नाम दिया है। भारतीय डाकतार विभाग ने 6 अगस्त 1976 को सुभद्रा कुमारी चौहान के सम्मान में 25 पैसे का एक डाक-टिकट जारी किया।

कविता के साथ ही उनका कथा साहित्य भी समृद्ध है। 'बिखरे मोती' उनका पहला कथा संग्रह है इनकी कहानियों का मुख्य स्वर पारिवारिक, सामाजिक दृश्य ही है। 'उन्मादिनी' और 'सीधे साधे चित्र' उनके अन्य कहानी संग्रह हैं। उन्होंने कुल 46 कहानियाँ लिखीं। वे एक अत्यंत लोकप्रिय कथाकार के रूप में हिंदी साहित्य में प्रतिष्ठित हैं।

झाँसी की रानी, मेरा नया बचपन, यह कदंब का पेड़, ठुकरा दो या प्यार करो, कोयल, पानी और धूप, वीरों का कैसा हो वसंत, झिलमिल तारे, मेरा जीवन, नीम, मुरझाया फूल, मेरे पथिक, समर्पण, अनोखा दान, व्याकुल चाह, आराधना, मेरा गीत, प्रतीक्षा, बिदाई, बालिका का परिचय, स्मृतियाँ आदि इनकी प्रसिद्ध कविताएँ हैं।

आज हम धर्मनिरपेक्ष समाज निर्माण का संकल्प लेते हैं लेकिन बहुत पहले सुभद्रा जी ने अपनी कविता में लिखा था,

'मेरा मंदिर, मेरी मस्जिद, काबा काशी यह मेरी,

पूजा-पाठ, ध्यान, जप-तप है, घट-घट वासी यह मेरी।

प्रभु ईसा की क्षमा शीलता, नबी मुहम्मद का विश्वास,

जीव दया जिन पर गौतम की, आओ देखे इसके पास।

इस तरह उन्होंने अपनी बालिका का परिचय दिया था। अपनी पाठशाला की पढ़ाई करते-करते ही उन्होंने कविता लिखना शुरू किया था। नौवीं कक्षा के बाद इनकी पढ़ाई भले ही छूट गई पर साहित्य सेवा नहीं छूटी। विवाहोपरांत पति ने भी उनकी प्रतिभा को पनपने के लिए उचित वातावरण देने का प्रयत्न किया।

उनकी मृत्यु के बाद जबलपुर वासियों ने नगरपालिका के प्रांगण में उनकी प्रतिमा लगवाई। उसके अनावरण के समय डॉ.रामकुमार वर्मा,कवि बच्चन, महादेवी वर्मा आदि उपस्थित थे। महादेवी जी ने कहा, 'नदियों का कोई स्मारक नहीं होता। दीपक की लौ को सोने से मढ़ दीजिए पर इससे क्या होगा? हम सुभद्रा के संदेश को दूर-दूर तक फैलाएँ और उसके महत्त्व को माने; यही असली स्मारक है।

जय हिंद!